ओ३म्

पाक्षिक परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५७ अंक - ११ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र जून (प्रथम) २०१५

महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि की बहन व चाचा की मृत्यु

वैराग्य, गृहत्याग, ठगी साधुओं के चक्कर में

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५७ **अंक** : ११
दयानन्दाब्द: १९१
विक्रम संवत्: ज्येष्ठ शुक्ल, २०७२
कलि संवत्: ५११६
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११६

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

जून प्रथम २०१५

अनुक्रम

१. सोमयाग ऋषि दयानन्द प्रतिपादित....	सम्पादकीय	०४
२. ते प्रतिप्रसवहेया: सूक्ष्मा: - १०	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१२
४. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		१७
५. ऊमर काव्य	ऊमरदान लालस	२०
६. मुलतान निवासी लिखित-वेद	घनश्याम मुलतान	२४
७. गीता के व्याख्याकारों से	स्वामी विवेकानन्द	२९
८. अज्ञान से ज्ञान की ओर	आचार्य शिवकुमार	३१
९. जिज्ञासा समाधान-८८	आचार्य सोमदेव	३३
१०. संस्था-समाचार		३६
११. स्तुता मया वरदा वेदमाता-११		३९
१२. आर्यजगत् के समाचार		४०

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

सोमयाग ऋषि दयानन्द प्रतिपादित यज्ञ

शान्तिधाम आर्यजगत् के लिये अब अपरिचित नाम नहीं है। यह इसके संस्थापक अनन्त आर्य के पुरुषार्थ और निष्ठा का परिणाम है। उन्होंने राष्ट्रीय संरक्षित वन प्रदेश के मध्य एक गाँव की निजी भूमि को खोजकर उसे क्रय किया। गाँव के लोग जंगली जानवरों के उत्पात के कारण गाँव छोड़कर बहुत पहले जा चुके थे, बाद के लोगों को पता भी नहीं था कि उनका कोई गाँव और उनकी जमीन भी है। ऐसी भूमि को खोजकर खरीदा और साठ एकड़ भूमि से आधी भूमि पर गुरुकुल की स्थापना की। आज अपने सहयोगियों के साथ श्री सत्यव्रत, श्री राधाकृष्ण आदि के पुरुषार्थ से स्वामी धर्मदेव के मार्गदर्शन में गुरुकुल चल रहा है। गुरुकुल का क्षेत्र कावेरी नदी के तट पर चारों ओर फैली पर्वतमाला के मध्य प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण है। यहाँ पर सोमयाग का आयोजन गत अनेक वर्षों से निरन्तर हो रहा है। सोमयाग की परम्परा तो बहुत पुरानी है। इस यज्ञ को सम्पन्न करने वाले परिवार आहिताग्नि होते हैं, जो अपने जीवन में दोनों समय यज्ञ करने का संकल्प ले चुके होते हैं। ऐसे लोग केवल पौराणिक परम्परा में ही शेष हैं। सस्वर वेदपाठ और यज्ञीय कर्मकाण्ड परम्परा को इन लोगों ने सुरक्षित रखा है। ये लोग कर्नाटक, महाराष्ट्र में तो अधिक हैं ही, अन्य दक्षिण भारत में भी कहीं-कहीं हैं।

आर्यसमाज में ऋषि दयानन्द ने इनकी चर्चा की है। अग्निहोत्र से अश्वमेध पर्यन्त यज्ञ करने का विधान भी किया है। ऋषि ने शाहपुराधीश के यहाँ इस प्रकार का यज्ञ कराया है। आज भी शाहपुरा के महल में इस प्रकार की वेदी बनी हुई है। शाहपुरा में एक अन्य भवन में भी इस यज्ञ के तीनों कुण्ड बने हुए हैं, परन्तु आर्यसमाज में इस प्रकार के यज्ञों की कोई परम्परा नहीं चली और आर्यसमाज के लोग इसे पाखण्ड मात्र समझकर इसमें कोई उत्सुकता भी नहीं रखते थे। पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी अपने यहाँ शतपथ, मीमांसा, तैत्तिरीय संहिता आदि को पढ़ाते हुए अपने शिष्यों को इन यज्ञों को देखने के लिए प्रेरित करते थे। इस परम्परा को पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने आगे बढ़ाया, ऐसे यज्ञ करने वालों से सम्पर्क स्थापित किया और उनके आयोजनों में सम्मिलित होते रहे, जिसके परिणामस्वरूप इनसे पण्डित जी का आत्मीयभाव बढ़ा। सेलूकर जी, श्रौती जी आदि पण्डित जी के मित्रों में सम्मिलित रहे। सेलूकर एक बार अजमेर पधारे, तब सात दिन तक ऋषि उद्यान में रहकर यज्ञशाला में प्रवचन देते रहे। इस प्रकार इस कर्मकाण्ड से आर्यसमाज के विद्वानों का सम्पर्क हुआ और वह सम्पर्क बढ़ता रहा। जहाँ-जहाँ भी इस प्रकार के यज्ञों का आयोजन होता रहता है, वहाँ-वहाँ आर्यसमाज के विद्वान् और छात्रगण उसे देखने जाते रहते हैं। इससे कर्मकाण्ड के ग्रन्थों का पठन-पाठन भी आर्यसमाज के विद्वान् करने लगे हैं। पं. मीमांसक जी ने लिखा है- सबसे पहले पं. सत्यव्रत जी ने श्रौतयज्ञों के परिचय पर पुस्तक लिखी थी। उसके पश्चात् तो मीमांसक जी ने तथा आचार्य विजयपाल जी ने श्रौत यज्ञों को देखकर उनका परिचय विस्तार से लिखा, जो वेदवाणी और पुस्तक रूप में पाठकों को सुलभ है।

शान्तिधाम के यज्ञ करने वालों का परिचय स्वतन्त्र रूप से है। शान्तिधाम के परिचय में बैंगलूर के कृष्ण भट्ट जी आये और उन्होंने सस्वर वेदपाठ के महत्त्व से संस्था संचालकों को अवगत कराया। आयोजकों को लगा कि वेद पढ़ना है तो सस्वर ही क्यों न पढ़ा जाय? संचालकों ने इन परम्परागत वेदपाठियों से अपने छात्रों को वेदपाठ सिखाना प्रारम्भ किया। निकट आने पर इन विद्वानों में से आर्यसमाज के प्रति जो दुर्भाव बना हुआ था, वह कम हुआ।

सस्वर वेदपाठ के शिक्षण के साथ श्रौत यज्ञों की परम्परा भी जाननी चाहिए, इस भावना से शान्तिधाम के संचालकों ने आयोजकों से केरल में बड़े सोमयाग का आयोजन कराया। फिर अनेक स्थानों पर छोटे-बड़े आयोजन संस्था के सहयोग से होते रहे। वर्तमान में पाँच वर्षों से सोमयाग का आयोजन शान्तिधाम में हो रहा है। सारा व्यय यज्ञ करने-कराने वाले उठाते हैं। स्थान, आवास आदि की सुविधा गुरुकुल की ओर से दी जाती है। जो लोग यज्ञ को

देखने जाते हैं, उनके भोजन, आवास आदि की व्यवस्था संस्था उदारता से करती है। स्थानीय परम्परा के अनुसार भोजन की विविधता और प्रचुरता अतिथियों को प्रसन्न और सन्तुष्ट करने वाली होती है। इन श्रौत यागों के आयोजन में एक और बात ध्यान देने योग्य है। ये यज्ञ कुछ लोग हिंसा करके करते हैं, कुछ लोग बिना हिंसा के करते हैं। शान्तिधाम के आयोजन में हिंसा नहीं थी, वे हिंसा की क्रियायें प्रतीकों से सम्पन्न करते हैं। वायवीय पशुयाग में आज्य पशु, अर्थात् एक पात्र में घी भर के उसे ही पशु मान लेते हैं, उसी की आहुति देते हैं। इसी प्रकार श्येनयाग के आयोजन में चिति निर्माण करते हुए, कछुआ तो जीवित रखा था। कहते हैं- वह अपने-आप नीचे निकल जाता है। एक मेढ़क को एक कुशा के थैले में डाल कर उसे वेदी पर घुमाया गया, परन्तु बाद में उसे छोड़ दिया गया। वेदी निर्माण करते हुए मनुष्य का, गाय का, बकरी का, घोड़े का, भेड़ का सिर-ये सब खिलौने के बने हुए थे, जिन्हें वेदी के अन्दर दबाया गया। दूध के लिए गाय और बकरी भी प्रतीक के रूप में बाँधी गईं। दूध तो बोतल में लाकर ही वेदी की अग्नि में डाला जाता था।

इस यज्ञ में जो विशेष आयोजन संस्था की ओर से किया गया था, वह था सोमयाग विषय पर गोष्ठी। इसमें अनेक स्थानीय विद्वानों के साथ आर्यसमाज के विद्वान् और सान्दीपनी वेद विद्या प्रतिष्ठान के सचिव डॉ. रूपकिशोर शास्त्री भी उपस्थित थे, जो गोष्ठी के अध्यक्ष थे। डॉ. रूपकिशोर जी के पुरुषार्थ से सस्वर वेद पाठशालाओं की एक लम्बी शृंखला स्थापित हो चुकी है, विशेष रूप से पौराणिक पाठशालाओं में कन्याओं को वेद सिखाने की परम्परा आपकी ऐतिहासिक उपलब्धि है। आपने अपनी प्रेरणा और दूसरों के सहयोग से आर्य संस्थाओं में भी बालकों के साथ बलिकाओं के सस्वर वेद सीखने की व्यवस्था कराई, यह वेद की सेवा का अच्छा उदाहरण है। इस गोष्ठी में आचार्य सनत्कुमार जी अपनी शिष्य मण्डली के साथ उपस्थित थे। आपने दृश्य उपकरणों से सोमयाग का परिचय और उसके वास्तविक स्वरूप पर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त दो विश्वविद्यालयों के कुलपति तथा अनेक लब्धप्रतिष्ठित वैज्ञानिक भी इस गोष्ठी में उपस्थित थे, जिन्होंने अपने शोधपूर्ण विचार गोष्ठी में प्रस्तुत किये, जिन्हें श्रोताओं ने बड़ी रुचि से सुना। इनमें मीमांसा मर्मज्ञ वासुदेव पराञ्जपे भी थे। इस यज्ञ और गोष्ठी के अवसर पर एक विचार सामने आया, जिससे ऐसा लगने लगा कि कुछ लोग समझते हैं, वेद को सस्वर पढ़ना ही शुद्धता की कसौटी है, बिना स्वर के वेद पढ़ना अशुद्ध है। इसी तर्क के आधार पर यह भी कहा गया कि जैसे वेद बिना स्वर के पढ़ना गलती है, वैसे ही कर्मकाण्ड की रीति को छोड़कर यज्ञ करना भी अशुद्ध है। यह विचार घातक है और ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के कार्यों को व्यर्थ करने वाला है। हमें प्रथम यह समझना चाहिए कि वेद है किसके लिए? वेद परमेश्वर का ज्ञान है, वेद मनुष्य मात्र के लिये है। यदि आप मनुष्य को वेद से दूर करते हैं तो आपका विधि-विधान वेद के प्रयोजन को सिद्ध नहीं करता, अतः ग्राह्य नहीं है। हमें समझना चाहिए कि वेद और यज्ञ में एक सतत सम्बन्ध है। दूसरे शब्दों में वेद सिद्धान्त है, ज्ञान है तो यज्ञ कर्म है। यज्ञ वेद का ज्ञानपूर्वक किया गया कर्म होने से यज्ञ वेद का व्यावहारिक या प्रायोगिक रूप है। वेद में ज्ञान या विज्ञान है तो विज्ञानपूर्वक यज्ञ किया जा सकता है, परन्तु सामान्य व्यक्ति के लिए भी तो वेद है, सामान्य व्यक्ति के लिये भी यज्ञ है, फिर उसको कैसे वञ्चित कर सकते हैं? पराम्परागत कर्मकाण्ड जहाँ लाखों रुपये व्यय करके बड़े-बड़े वेदज्ञों, वेदपाठियों द्वारा सम्पन्न किया जाता है तो सामान्य जनता के लिये क्या होगा? यज्ञ तो जनता के लिये कहा गया है। यह ठीक है कि कोई पढ़कर विशेषज्ञ, विद्वान् बनता है, परन्तु कोई कम पढ़कर सामान्य भी रहता है। जैसे पढ़ने का विशेषज्ञता से अनिवार्य सम्बन्ध नहीं है, उसी प्रकार वेद और यज्ञ के भी सामान्य-विशेष दोनों से सम्बन्ध हैं।

पौराणिक परम्परा को ही ठीक और अन्तिम नहीं माना जा सकता। इन यज्ञों में हिंसा का विधान करके इनको भी तो विकृत किया गया है। ऋषि दयानन्द ने इस एकाधिकार को ही तो तोड़ा है। सब वेद सस्वर नहीं पढ़ सकते, परन्तु जो सस्वर पढ़ते हैं, वे भी तो अर्थज्ञान से

रहित होने के कारण अधूरे हैं। केवल सस्वर वेद पढ़कर कर्मकाण्ड करने से तो वेद का प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। स्वर और कर्मकाण्ड अर्थज्ञान में सहायक हैं, इसलिए स्वीकार्य हैं। अर्थज्ञान के बिना स्वर और कर्मकाण्ड का कितना महत्त्व रह जायेगा, ऋषि दयानन्द ने इसी अर्थ के पक्ष को ही हमारे सामने रखा है। उन्होंने मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने और यज्ञ करने का अधिकार दिया है तो वह वेद वैसा ही तो पढ़ेगा, जैसा उसे आता है, यज्ञ भी उतना ही कर पायेगा, जितनी उसे जानकारी है। उसकी जानकारी कम है, केवल इसिलिये उसे उसके अधिकार से वञ्चित नहीं किया जा सकता। अधिक जानेगा तो अधिक लाभ उठा सकेगा, कम जानेगा तो कम लाभ ले पायेगा। स्वामी दयानन्द संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण में यज्ञ की विधि बताते हुए निर्देश करते हैं कि ''सब संस्कारों में मधुर स्वर से मन्त्रोच्चारण यजमान ही करे। न शीघ्र, न विलम्ब से उच्चारण करें, किन्तु मध्य भाग जैसा कि जिस वेद का उच्चारण है, करें। यदि यजमान पढ़ा हो तो इतने मन्त्र तो अवश्य पढ़ लेवे। यदि कोई कार्यकर्त्ता जड़, मन्दमति, काला अक्षर भैंस बराबर जानता हो, तो वह शूद्र है, अर्थात् शूद्र मन्त्रोच्चारण में असमर्थ हो, तो पुरोहित और ऋत्विज मन्त्रोच्चारण करें और कर्म उसी मूढ़ यजमान के हाथ से करावें।'' क्या इस ऋषि वाक्य को सस्वर वेद पाठ और कर्मकाण्ड के सामने मिथ्या कर देंगे? ऋषि दयानन्द कन्याओं को वेद पढ़ाने का आग्रह करते हैं, इतना ही नहीं, ऋषि दयानन्द ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में वेदाध्ययन के अधिकार की चर्चा करते हुए सबको, मनुष्य मात्र स्त्री-पुरुषों को वेद पढ़ने का अधिकार प्रतिपादित करते हैं और **यथेमां** मन्त्र की व्याख्या में मनुष्य को अपने परिवार के लोगों के साथ अपने घर के सेवक और मजदूर को भी वेद पढ़ाने का निर्देश देते हैं। क्या ऐसी परिस्थिति में नौकर सस्वर वेद पढ़ेंगे या विधिपूर्वक यज्ञ करेंगे? वे जैसा जानते हैं, वैसा ही तो कर पायेंगे।

स्वामी दयानन्द का निर्देश वेद से है, अतः बाकी शास्त्र या परम्परा उसके सामने गौण है। वेद का आदेश स्वतः प्रमाण है। क्या ऋषि दयानन्द व्यवस्था देने के अधिकारी नहीं हैं? ऋषि दयानन्द से किसी आचार्य का मन्तव्य मेल नहीं खाता या विरोधी लगता है तो उसे विरोध न समझकर मत भिन्नता भी तो समझा जा सकता है। फिर इन यज्ञों के देखने या सस्वर वेद पढ़ने से आर्य समाज में चल रही परम्परा को अशुद्ध क्यों मानना चाहिए? जहाँ सस्वर वेदपाठ हमारा उत्कर्ष है, वहाँ तक पहुँचाने का मार्ग ऋषि दयानन्द को दिये अधिकार के द्वारा प्रशस्त किया गया है, अतः इस भ्रम की कोई सम्भावना नहीं है कि आर्यसमाज की यज्ञ परम्परा या वेदपाठ अशुद्ध या अग्राह्य है। कर्मकाण्ड भी वेद को समझने के लिये ही हैं। पूरे शतपथ ब्राह्मण में मन्त्रों के माध्यम से यज्ञ की क्रियाओं को मन्त्रों के साथ जोड़कर अभिप्राय को समझाया जा रहा है। मन्त्र, उसका अर्थ, यज्ञ की क्रिया में मन्त्रार्थ की संगति, मन्त्र के अर्थ और यज्ञ की क्रिया का जगत् में चल रहे निरन्तर यज्ञ से उसकी समानता बताना यज्ञ का उद्देश्य है। इस बात को ध्यान में रखकर महर्षि दयानन्द ने यज्ञ में मन्त्रों का विनियोग किया है। महर्षि दयानन्द ने यज्ञ में कर्मकाण्ड के साथ वेद मन्त्रों का विनियोग करते हुए यज्ञ से परमेश्वर की उपासना का होना कहा है। इस प्रकार महर्षि दयानन्द का यज्ञ विधान अधिक वैदिक व उत्कृष्ट है।

मनु महाराज ने वेद को समस्त धर्म का मूल कहा है। जिसका भी धर्म से सम्बन्ध है, उसका वेद से सीधा सम्बन्ध है। वेद के प्रकाश में मनुष्य कार्य कर सकता है। जैसे सूर्य के प्रकाश के बिना मनुष्य कार्य करने में समर्थ नहीं होता, उसी प्रकार वेदरूपी ज्ञान चक्षुओं के बिना मनुष्य उचित-अनुचित का विवेक करने में असमर्थ रहा है। मध्य काल में समाज के एक वर्ग ने लोगों के ज्ञान चक्षुओं को छीन कर समाज को गहरे अन्धकार में धकेल दिया था, ऋषि दयानन्द ने उस अन्धे समाज को वेद रूपी ज्ञान चक्षु पुनः प्रदान किये। किसी भी प्रकार से इस अधिकार को क्षति पहुँचाना वेद विरोधी कार्य होगा, चाहे वह वेद के नाम पर ही क्यों न किया गया हो। हमें मनु के इन शब्दों को सदा स्मरण रखना चाहिए-

पितृदेवमनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनम्।
अशक्यञ्चाप्रमेयञ्च वेदशास्त्रमिति स्थितिः।।

- धर्मवीर

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण.....

ते प्रतिप्रसवहेयाः सूक्ष्माः - १०

- स्वामी विष्वङ्

महर्षि पतञ्जलि ने पाँचवें सूत्र से लेकर नौवें सूत्र तक पाँचों क्लेशों की परिभाषाएँ दीं और चौथे सूत्र **(अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषां प्रसुप्ततनुविच्छिन्नोदाराणाम्)** में क्लेशों की चार अवस्थाएँ बतायीं। उन्हीं चार (सोये हुए, कमजोर हुए, दबे हुए और वर्तमान में रहने वाले की) अवस्थाओं को दो विभागों में बाँटकर महर्षि ने प्रस्तुत सूत्र की चर्चा की है। वे दो भाग स्थूल रूप में और सूक्ष्म रूप में विद्यमान रहते हैं। क्लेशों के स्थूल रूप को हटाने-समाप्त करने के लिए क्रियायोग है। तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान के माध्यम से क्लेशों के स्थूल-उग्ररूप को नष्ट किया जाता है। क्लेशों के सूक्ष्मरूपों-कमजोर रूपों को नष्ट करने के लिए जिस प्रसंख्यान रूपी तत्त्वज्ञान को अपनाते हुए उन्हें दग्धबीज के समान बनाकर कारण प्रकृति में पहुँचाया जाता है, उसे बताने के लिए प्रस्तुत सूत्र प्रवृत्त हुआ है। सूत्र का अर्थ इस प्रकार है- वे अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश जब क्रियायोग के माध्यम से सूक्ष्म हो जाते हैं, तब उन क्लेशों को जले हुए-भुने हुए बीजों के समान बनाकर कारण प्रकृति-सत्त्व, रज और तम में विलीन (प्रलय) कर देना चाहिए, जिससे आत्मा और दृश्य का संयोग न हो। उनके संयोग का न होना ही मोक्ष कहलाता है।

महर्षि वेदव्यास प्रस्तुत सूत्र की व्याख्या करते हुए कहते हैं-

ते पञ्च क्लेशा दग्धबीजकल्पा योगिनश्चरिताधिकारे चेतसि प्रलीने सह तेनैवास्तं गच्छन्ति।

अर्थात् योगाभ्यासी तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान रूपी क्रियायोग को अत्यन्त पुरुषार्थ के साथ अपने जीवन में लाता हुआ, उन पाँचों क्लेशों को तनू-कमजोर बना देता है। योग के यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा और ध्यान को अपनाता हुआ लम्बे काल तक, निरन्तर-बिना व्यवधान के ब्रह्मचर्य पूर्वक, विद्यापूर्वक और श्रद्धापूर्वक जीवन में उतारता हुआ घोर पुरुषार्थ से कमजोर हुए क्लेशों को दग्धबीजभाव की ओर ले चलता है। अभिप्राय यह है कि उन क्लेशों को जले हुए-भुने हुए चने के बीजों के समान बना देता है। जिस प्रकार भुने हुए चने अंकुरित होने में असमर्थ होते हैं, उसी प्रकार क्लेश भी पुनः उद्बुद्ध नहीं होते हैं, अर्थात् व्यवहार में नहीं आते हैं। जब पाँचों क्लेश दग्धबीज वाले बन जाते हैं, तब मन समाप्त अधिकार वाला बन जाता है। मन के दो प्रयोजन हैं- एक संसार का भोग कराना और दूसरा अपवर्ग-मोक्ष दिलाना। इन दोनों प्रयोजनों को पूरा करना ही मन का अधिकार-कर्त्तव्य है। जैसे ही इन कर्त्तव्यों को मन पूरा करता है, तो मन समाप्त कर्त्तव्यों वाला बनता है, इस समाप्त कर्त्तव्य वाले मन को ही **चरिताधिकार** मन कहते हैं।

जिस योगी के मन के कर्त्तव्य पूर्ण हो चुके हों, ऐसे मन का इस संसार में रहने का कोई औचित्य नहीं रह जाता, इसलिए क्लेशों को दग्धबीज अवस्थाओं में पहुँचाने वाले योगी का मन योगी से अलग होता है। यहाँ मन मुख्य होने से मन को लेकर चर्चा की जा रही है। यद्यपि मन के साथ-साथ सभी इन्द्रियाँ, सभी तन्मात्राएँ, अहंकार, महत्तत्त्व रूपी बुद्धि सहित अठारह तत्त्वों का समुदाय रूपी सूक्ष्म शरीर अपने कारण रूपी सत्त्व, रज, तम में विलीन हो जाता है। इन अठारह तत्त्वों में मन की भूमिका महत्त्वपूर्ण होने से ऋषि ने मन को लेकर कथन किया है कि चरिताधिकार वाला मन अपने कारण रूपी प्रकृति (सत्त्व, रज, तम) में विलीन होता है। जब मन अपने कारण में विलीन होता है, तब दग्धबीज वाले क्लेशों की क्या स्थिति होती है? इसका समाधान ऋषि करते हैं- **'तेनैव सह अस्तं गच्छन्ति।'** अर्थात् उसी मन के साथ-साथ दग्धबीज वाले पाँचों क्लेश भी सत्त्व, रज, तम में मिल जाते हैं। यहाँ पर महर्षि वेदव्यास ने दग्धबीज अवस्था वाले क्लेशों (अविद्या) को सत्त्व, रज, तम में मिलने की बात की है, अर्थात् अविद्या कारण रूप में प्रकृति में रहती है।

अविद्या कार्य रूप में रहती है, तो मन में रहती है, इस बात को महर्षि वेदव्यास ने स्पष्ट शब्दों में अनेकत्र कहा है। जैसे **'ते च मनसि वर्तमानाः पुरुषे व्यपदिश्यन्ते, स हि तत्फलस्य भोक्तेति।'** (योगदर्शन १.२४) **'तावेतौ भोगापवगौ बुद्धिकृतौ बुद्धावेव वर्तमानौ कथं पुरुषे व्यपदिश्येते....अभिनिवेशा बुद्धौ वर्त्तमाना पुरुषेऽध्यारोपित सद्भावाः स हि तत्फलस्य भोक्तेति।'** (योगदर्शन २.१८) **'प्रत्ययं बौद्धमनुपश्यति तमनुपश्यन्नतदात्माऽपि तदात्मक इव प्रत्यवभासते।'** (योगदर्शन २.२०) इन सभी प्रमाणों का एक ही तात्पर्य है

कि उत्पन्न होने वाली अविद्या और विद्या- दोनों ही मन में रहती हैं। कोई यह न समझे कि ज्ञान जड़ में कैसे रह सकता है? ज्ञान के जड़ में रहने से कोई भी आपत्ति नहीं आती है। हाँ, यदि वह जड़ उस ज्ञान को अनुभव करने लगे, तो आपत्ति आ सकती है, परन्तु जड़ वस्तु अनुभव नहीं कर सकती। क्यों? चेतन न होने से। इसलिए उत्पन्न मात्र पदार्थ चाहे वे द्रव्य के रूप में हों या गुण के रूप में हों, जड़ में ही रहते हैं। आत्मा तो **अप्रतिसंक्रमा**- न घुलने-मिलने वाला है, इसलिए उत्पन्न मात्र पदार्थ व गुण घुलने-मिलने वाले जड़ पदार्थों में ही रह सकते हैं। विद्या और अविद्या के निवास स्थान जड़ पदार्थ हैं, इसी कारण महर्षि वेदव्यास कहते हैं- कार्यकाल में ये दोनों मन में रहते हैं और कार्यकाल समाप्त होने पर अपने कारण प्रकृति में मिल जाते हैं।

यहाँ पर विद्या और अविद्या का निवास स्थान जड़ को कहने से यह नहीं समझना चाहिए कि विद्या के निवास स्थान चेतन नहीं हो सकते। हाँ, विद्या के निवास स्थान चेतन भी होते हैं, परन्तु वहाँ विद्या उत्पन्न होने वाली नहीं है। परमात्मा में विद्या सदा रहती है और नित्य होने से वह कभी न्यून या अधिक नहीं होती है। ईश्वर का ज्ञान (विद्या) नित्य है, इसलिए घटता और बढ़ता नहीं है। जीवात्मा का अपना स्वाभाविक ज्ञान (विद्या) है और वह भी घटता और बढ़ता नहीं है। हाँ, जो उत्पन्न होने वाली विद्या और अविद्या हैं, वे घटती और बढ़ती हैं, परन्तु यह घटना और बढ़ना मन में होता रहता है, आत्मा में नहीं। इसलिए इस बात को अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिए कि उत्पन्न मात्र पदार्थ और गुणों का आश्रय स्थान जड़ पदार्थ ही होते हैं। इस कारण विद्या और अविद्या और उसके संस्कार जड़ मन में रहते हैं, इस बात को स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। यहाँ पर केवल आश्रय के रूप में बताया जा रहा है, इस निवास के कारण जड़, चेतन नहीं बन जाता। अनुभव करने वाला ही चेतन होता है, यही सत्य है।

महर्षि वेदव्यास ने दग्धबीजभाव को प्राप्त हुए क्लेशों को मन के साथ प्रकृति में विलीन होने की बात कही है। क्लेश दग्धबीज अवस्था को कैसे प्राप्त होते हैं, इसकी चर्चा महर्षि ने समाधि पाद में विस्तार से की है, वहीं पर समझने का प्रयास करना चाहिए। फिर भी यहाँ संक्षेप से कह देता हूँ- विषय भोगों की यथार्थता को जानने से योगाभ्यासी को विवेक हो जाता है और उस विवेक से वैराग्य उत्पन्न होता है, अर्थात् विषय भोगों से तृष्णा हट जाती है, जिससे योगाभ्यासी का मन पूर्ण एकाग्र हो जाता है, मन की एकाग्रता से समाधि लगती है और उस समाधि से जड़ और चेतन आत्मा का साक्षात्कार होता है। आत्म साक्षात्कार से गुणों के प्रति पूर्ण तृष्णा रहित हो जाने से प्रभु दर्शन हो जाता है। प्रभु दर्शन का अभ्यास क्लेशों को दग्धबीज बना देता है। दग्धबीज हुए क्लेश आत्मा को दु:ख नहीं दे सकते, इसलिए आत्मा का प्रयोजन पूरा हो जाता है, प्रयोजन के पूर्ण होने से मन का कार्य समाप्त हो जाता है। फिर चरितार्थ मन अपने कारण में विलीन होता है, तो क्लेश भी मन के साथ-साथ प्रकृति में विलीन हो जाते हैं।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १४ से २१ जून, २०१५

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

इस प्रत्यक्ष चराचर जगत् के चौंतीस (३४) तत्त्व कारण हैं उनके गुण और दोषों को जो जानते हैं उन्हीं को सुख मिलता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६१

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

उत्तर देने की कला:- गत तीन चार मास में बिजनौर के आर्यवीर श्री विजयभूषण जी तथा कुछ अन्य नगरों के आर्य सज्जनों ने भी चलभाष पर दो बातें विशेष रूप से इस लेखक को कहीं। **१.** आपकी उत्तर देने की कला बहुत अनूठी है। २. आप तड़प-झड़प में इतिहास की ठोस सामग्री देते हैं। इसमें अलभ्य लेखों, पत्र-पत्रिकाओं तथा इस समय अप्राप्य साहित्य की पर्याप्त चर्चा होने से बहुत जानकारी मिलती है। अनेक बन्धुओं विशेष रूप से युवकों के मुख से ये बातें सुनकर उत्तर देने की कला पर दो-चार बार कुछ विस्तार से लिखने का विचार बना।

मैं गत दस-बारह वर्षों से मेधावी लगनशील युवकों से बहुत अनुरोध से यह बात कहता चला आ रहा हूँ कि वैदिक धर्म पर वार-प्रहार करने वालों को उत्तर देना सीखो। अब भी आर्य समाज में कुछ अनुभवी विद्वान् ऐसे हैं, जिनकी उत्तर देने की शैली मौलिक, विद्वत्तापूर्ण तथा हृदयस्पर्शी है। श्री डॉ. धर्मवीर जी को जब उत्तर देना होता है तो उनकी लेखनी की रंगत ही कुछ निराली होती है। श्री राम जेठमलानी ने श्री रामचन्द्र जी पर एक तीखा प्रश्न उठाया। संघ परिवार के ही श्री विनय कटियार ने उनके स्वर में स्वर मिला दिया।

राम मन्दिर आन्दोलन का एक भी कर्णधार श्रीयुत् राम जेठमलानी के आक्षेप का सप्रमाण यथोचित उत्तर न दे सका। मेरे जैसे आर्यसमाजी रामभक्त भी तरसते रहे कि उमा भारती जी, श्री मुरली मनोहर जी अथवा सर संघचालक आदरणीय भागवत जी इस आक्षेप का कुछ सटीक उत्तर दें, परन्तु ऐसा कुछ भी न हुआ। परोपकारी का सम्पादकीय पढ़कर अनेक पौराणिकों ने भी यह माँग की कि श्री धर्मवीर जी श्री राम के जीवन पर इसी शैली में २५०-३०० पृष्ठों की एक मौलिक पुस्तक लिख दें।

श्री डॉ. ज्वलन्त कुमार जी भी जानदार उत्तर देते हैं। परोपकारी में श्री आचार्य सोमदेव जी तथा आदरणीय सत्यजित् जी द्वारा शंका समाधान की शैली प्रभावशाली व प्रशंसनीय है।

आर्यसमाज में श्री राजवीर जी जैसे उदीयमान लेखक तथा अनुभवी गम्भीर विद्वान् डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने भी इस विनीत से एक दो बार कहा, 'आपने उत्तर देते हुए चुटकी लेना कहाँ से सीखा?'

मैंने कहा, 'अपने बड़ों से और विशेष रूप से पूज्य पं. चमूपति जी से।'

प्रिय राजवीर जी तथा श्री धर्मेन्द्र जी 'जिज्ञासु' ने तो कुछ श्रम करके उत्तर देने की कला सीखी व विकसित की है, परन्तु बहुत से युवक इस दिशा में कुछ करके दिखा नहीं सके और राजवीर जी तथा धर्मेन्द्र जी भी समय के अभाव में जितना उन्हें बढ़ना चाहिये, बढ़ नहीं सके। कई युवक ऐसे भी मिले हैं, जो गुरु तो बनाने की ललक रखते हैं, परन्तु उनमें विनम्रता व श्रद्धा से सीखने की ललक नहीं। घर बैठे तो यह विद्या आती नहीं।

आइये, उत्तर देने की आर्यसमाजी कला का कुछ इतिहास यहाँ देते हैं। मैंने जो पूर्वजों (इस कला के आचार्यों) के मुख से जो कुछ सुना व पढ़ा है, इस कला के जनक तो स्वयं पूज्य ऋषिवर दयानन्द जी महाराज थे। उनके पश्चात् इस कला के सिद्धहस्त कलाकार पं. लेखराम जी मैदान में उतरे। यह मेरा ही मत नहीं है, लाला लाजपतराय जी ने भी अपनी लौह लेखनी से ऐसा ही लिखा है। बड़े-बड़े मौलवियों तथा सनातन धर्मी नेता पं. दीनदयाल जी का भी ऐसा ही मत था। मौलाना अब्दुल्ला मेमार तथा मौलाना रफ़ीक दिलावरी जी का भी ऐसा ही मत था।

तनिक महर्षि जी की उत्तर देने की कला पर भी इतिहास शास्त्र का निर्णय सुना दें। आर्यसमाजी लेखक जो ऋषि जीवन की तोता रटन लगाते रहते हैं, वे इतिहास के इस निर्णय को जानते ही नहीं और परोपकारी में पढ़-सुनकर इसे आगे प्रचारित ही नहीं करते।

१. वैद्य शिवराम पाण्डे ऋषि के साथ प्रयाग रहे। वे काशी की पाठशाला में भी रहे। वे आर्यसमाजी तो नहीं थे, परन्तु ऋषि की संगत की रंगत मानते थे। आपका एक दुर्लभ लेख हमारे पास है। वे लिखते हैं कि ऋषि एक ही प्रश्न का उत्तर कई प्रकार से देना जानते थे। श्री गोस्वामी घनश्याम जी मुल्तान निवासी बाल शास्त्री की कोटि के विद्वानों में से एक थे। काशी शास्त्रार्थ के समय आप काशी में नहीं थे। जब काशी शास्त्रार्थ के पश्चात् मूर्तिपूजकों ने देशभर में यह प्रचार करना चाहा कि स्वामी दयानन्द शास्त्रार्थ में हारे तो गोस्वामी झट से काशी गये। बाल शास्त्री से

मिलकर पूछा, सच-सच बताओ! क्या स्वामी दयानन्द हारे या काशी के पण्डित?

तब बाल शास्त्री जी ने वीतराग दयानन्द के गुणों का बखान करते हुए कहा था कि हम जैसे निर्बल संसारी उन्हें हराने वाले कौन?

चाँदापुर के शास्त्रार्थ में पादरी महोदय ने कहा था, ''सुनो भाई मौलवी साहबो! पण्डित जी इसका उत्तर हजार प्रकार से दे सकते हैं। हम और तुम हजारों मिलकर भी इनसे बात करें तो भी पण्डित जी बराबर उत्तर दे सकते हैं, इसलिए इस विषय में अधिक कहना उचित नहीं।''

पादरी जी का यह कथन आर्यसमाज में प्रचारित करने वाले चल बसे। पुस्तकों की सूचियाँ बनाने वाले सम्पादक लेखक शास्त्रार्थ कला (विधा) को समझ ही न सके।

पं. लेखराम जी की उत्तर देने की कला की एक घटना 'आर्य मुसाफिर' मासिक की फाईलों में छपे उनके एक शास्त्रार्थ से मिली। सीमा प्रान्त के एक नगर में प्रतिमा पूजन पर एक शास्त्रार्थ में पण्डित जी ने '**न तस्य प्रतिमाऽअस्ति**' इस वेद वचन से अपने कथन की पुष्टि की तो विरोधी ने कहा कि यहाँ 'नतस्य' है अर्थात् प्रतिमा के आगे झुकने की बात है। यहाँ 'तस्य' शब्द नहीं। तब पण्डित जी ने कहा कि यदि यहाँ 'तस्य' शब्द नहीं तो फिर इस मन्त्र में 'यस्य' शब्द किसके लिए है? वहाँ पौराणिक पण्डितों ने भी पण्डित जी के इस तर्क व प्रमाण का लोहा माना। यह किसी भी शास्त्रार्थ में किसी संस्कृतज्ञ आर्य ने तर्क न दिया। श्रद्धेय पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने इस प्रसंग में हमें कहा था, ''यह तो पं. लेखराम जी के जन्म-जन्मान्तरों का संस्कार और उनकी ऊहा का चमत्कार मानना पड़ेगा।''

अब इस प्रसंग में इतिहास का एक और निचोड़ देना लाभप्रद होगा। पं. गणपति शर्मा जी तथा श्री स्वामी दर्शनानन्द जी की उत्तर देने की कला भी विलक्षण थी। इनके पश्चात् आर्यसमाज में अपनी-अपनी कला से उत्तर देने में कई सुदक्ष कलाकार विद्वान् हुए, परन्तु स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, श्री पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, पं. रामचन्द्र जी देहलवी, पं. लक्ष्मण जी आर्योपदेशक, स्वामी सत्यप्रकाश जी- इन पाँच महापुरुषों के दृष्टान्त, तर्क व प्रमाण अत्यन्त प्रभावशाली, मौलिक व हृदयस्पर्शी होते थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने चार बार पूरे भारत का पैदल भ्रमण किया। उनके पास दृष्टान्तों का अटूट भण्डार व जीवन के बहुत अनुभव थे।

आचार्य रामदेव जी, मेहता जैमिनि जी तथा श्री पं. धर्मदेव जी को विश्व साहित्य के असंख्य उद्धरण कण्ठाग्र थे। इन तीनों की उत्तर देने की कला भी बड़ी न्यारी व प्यारी थी। मैं बाल्यकाल में अपने छोटे से ग्राम के आर्यों की परस्पर की चर्चा सुन-सुनकर ग्राम के एक आर्य युवक कार्यकर्ता से पूछा करता था कि आचार्य रामदेव जी की वक्तृत्व कला की क्या विशेषता है? उनका उत्तर था- उन्हें सब कुछ कण्ठाग्र है। मैं अपने निजी अनुभव से यह बताना चाहूँगा कि मैं सब पूज्य विद्वानों को ध्यान से सुना करता था। उनसे चर्चा किया करता था, फिर चिन्तन करने का अभ्यास हो गया। इससे मेरी भी उत्तर देने की कला विकसित हुई।

स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ ने मेरे आरम्भिक काल में अत्यन्त प्यार से, कुछ डाँटकर कहा कि जो पढ़ो व सुनो, उसपर विचार कर स्वयं उत्तर खोजो, फिर उत्तर न सूझे तो आकर पूछा करो। अब इन उतावले युवकों का न गहन अध्ययन है, न बड़ों से कुछ सीखने की भूख है। प्राणायाम की चर्चा सुनकर तथा दो योग शिविरों में भाग लेकर ये सब नौ सिखिये योगाचार्य बनकर ध्यान शिविर लगाने व अपना आश्रम या अड्डा बनाने में लग जाते हैं। यह प्रवृत्ति धर्मप्रचार में बाधक रोड़ा बन रही है।

सगुण क्या निर्गुण क्या?:- अबोहर के डी.ए.वी. कॉलेज में कुछ वर्ष पूर्व दो योग्य युवा हिन्दी प्राध्यापक नियुक्त हुए। कुछ पुराने अध्यापकों से लेखन व साहित्य सृजन की चर्चा करते समय उन्होंने अपने पुराने सहयोगियों से मेरे लेखन-कार्य के बारे में कुछ सुना। एक दिन फिर धूप में खड़े-खड़े वे कुछ ऐसी ही चर्चा कर रहे थे। पुनः मेरा नाम किसी ने लिया तो वे बोले- उनका निवास कॉलेज पुस्तकालय के पीछे ही तो है। वे प्रायः कॉलेज के डाकघर पत्र डालने व कार्ड आदि लेने आते रहते हैं। जो दुबला-पतला व्यक्ति चलते-चलते यहाँ से पढ़ता-पढ़ता निकले बस समझलो- वह राजेन्द्र जिज्ञासु ही हो सकता है। वे यह बात कर ही रहे थे कि मैं चलते-चलते उधर से निकला। कुछ पढ़ता भी जा रहा था। मेरी उनसे भेंट करवाई गई। कुछ चर्चा छिड़ गई। क्या लिख रहे हो? आजकल किस विषय की खोज में लगे हो? कुछ ऐसे प्रश्न पूछे।

मैंने उन्हें अपने निवास पर दर्शन देने के लिए कहा। वे निमन्त्रण पाकर प्रसन्न हुए और दो दिन में मिलने आ गये। मैं अपने लेखन-कार्य में व्यस्त था। बातचीत चल पड़ी तो उन दो में से एक ने कहा- आर्यसमाज तो निर्गुण, निराकार की उपासना को मानता है, जब कि भक्तिकाल के कई सन्त सगुण, साकार ईश्वर की उपासना को मानते हैं।

यह कथन सुनकर इस लेखक ने उनसे कहा- आपके कथन में आंशिक सच्चाई है। आर्यसमाज तो ईश्वर को निर्गुण व सगुण दोनों मानता है। कोई भी वस्तु ऐसी नहीं जो निर्गुण न हो और कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं जो सगुण न हो।

मेरे मुख से निकले ये शब्द सुनकर वे दोनों चौंक पड़े। दोनों ही पीएच.डी. उच्च शिक्षित सज्जन थे। वे बोले हिन्दी साहित्य में तो अनेक लेखकों ने निर्गुण भक्ति को निराकार की उपासना और सगुण उपासना का अर्थ मूर्त्तिपूजा ही माना है। कुछ सन्त महात्माओं के नाम भी लिए।

उनसे निवेदन किया गया कि सन्तों को इस चर्चा में मत घसीटें। मैं भी बहुत नाम ले सकता हूँ। आप यह बतायें कि सगुण व निर्गुण इन दो शब्दों में जो 'गुण' शब्द पड़ा है, इसका अर्थ क्या है? कोई-सा शब्दकोश उठा लीजिये अथवा किसी ग्रामीण निरक्षर वृद्धा से पूछें कि 'गुण' शब्द का अर्थ क्या है? यह शब्द देशभर में प्रयुक्त होता है। सर्वत्र इसका आशय क्वालिटी सिफ़त ही जाना, माना व समझा जाता है। सद्गुण, अवगुण सब ऐसे शब्द यही सिद्ध करते हैं या नहीं? उनको मेरी बात जँच गई। वे इसका प्रतिवाद न कर सके।

अब उनसे पूछा कि जब गुण का अर्थ आप क्वालिटी विशेषतायें मानते हैं तो फिर 'सगुण' 'निर्गुण' की चर्चा में काया अथवा शरीर-आकार कैसे घुस गया? वे बोले- यह बात तो हमने पहली बार ही सुनी है। आपका तर्क तो बहुत प्रबल है। मैंने कहा- आप चिन्तन करिये। स्वाध्याय करिये। बहुत कुछ नया मिलेगा। आप अन्ध परम्पराओं की अंधी गुफाओं से निकलें। वेद, दर्शन, उपनिषद् तक पहुँचे। सत्य का बोध हो जायेगा। मान्य सोमदेव जी के 'जिज्ञासा समाधान' में सगुण-निर्गुण विषयक चर्चा पढ़कर यह प्रसंग देने का मैंने साहस किया है। आशा है कि पाठकों को इससे लाभ मिलेगा, प्रेरणा प्राप्त होगी।

हिन्दुओं का सुधार कुछ तो करिये!:- हिन्दुत्व की चर्चा करना भी एक राजनीतिक फैशन हो गया। विश्व हिन्दू परिषद् व संघ परिवार के सब प्रवक्ता यही समझाने में लगे रहते हैं कि हिन्दुत्व एक जीवन शैली है। हिन्दुत्व की व्याख्या करने व परिभाषा बताने पर बहुत शक्ति लगाई जाती है। नये-नये विवाद खड़े होने पर सन्तों की संसद बुलाकर निर्णय करने की घोषणायें भी बहुत की जाती हैं। हिन्दुओं के भले की बात कोई भी करे तो यह अच्छी बात है, परन्तु जिसका आप भला करना चाहते हैं, उसका भला तो सबसे पहले उसे रोगमुक्त करने से ही होगा।

इन हिन्दुत्ववादियों ने हिन्दू समाज के एक भी रोग का आज तक उपचार सुधार नहीं किया। पुराने रोग तो थे- सो थे, अब मन्दिरों में भगदड़ मचने से अनेक लोग मर जाते हैं। आये दिन ऐसी दुर्घटनायें होती हैं। इस पर किसी सन्त संसद ने शोक प्रस्ताव पारित किया? क्या यह जातीय हितों की माला फेरने वालों की हृदय हीनता नहीं है? तीर्थ यात्री कहाँ-कहाँ, कब-कब, कितने मरे? आतंकियों ने कितने हिन्दू तीर्थ यात्री मारे? इस पर कहाँ हिन्दुत्व के व्याख्याकारों ने कोई विचार व्यक्त किये? जब प्रयाग, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार में तीर्थ यात्री नदी में स्नान करते हैं, तब भी इनकी अव्यवस्था देख कर रोना आता है। एक डुबकी लगाता है तो दूसरा खड़ा होता है। कहीं कोई क्रम नहीं, कोई पंक्ति नहीं, कोई व्यवस्था नहीं। सब कुछ अशोभनीय। क्या यही हिन्दू जीवन शैली है?

बाबों के नोट गिनना मनुष्यों के बस की बात नहीं। मशीनें मँगवा कर भगवानों के नोट गिने जाते हैं। क्या तिलक लगाना हिन्दू जीवन शैली है? तिलक का भी एक प्रकार नहीं। क्या आस्तिक होना हिन्दू जीवन शैली है? जगत् का विश्व का सुख व कल्याण चाहना हिन्दू जीवन शैली है तो फिर जगत् को मिथ्या मानने का प्रतिवाद क्यों नहीं? जाति-पाँति व हिन्दुत्व का क्या सम्बन्ध है? शंकराचार्य की गद्दी पर जन्म का ब्राह्मण ही क्यों आसीन हो? इस रोग को दूर करने के लिए संघ परिवार ने आज तक क्या किया है?

रग-रग में राम है, यह तो टी.वी. पर कह दिया। राम मन्दिर की तो बहुत दुहाई दी जाती है, परन्तु हिन्दुओं में विधवा-विवाह के लिए आज भी कतई उत्साह नहीं। पति त्यक्ता स्त्रियों की संख्या बढ़ती जा रही है। क्या यह सामाजिक कोढ़ नहीं? इसके बारे में कभी चिन्ता की है? अष्टांग योग को हिन्दू जीवन शैली मानते हो तो कई मन्दिरों

व तीर्थों पर पशुबलि तथा मांस व मदिरा के प्रसाद को कुरीति मानकर कभी सुधार का कोई यत्न किया है?

संघ का जन्म महाराष्ट्र में हुआ। नासिक, केरल, कर्नाटक व तमिलनाडु में कई वेद पाठशालायें हैं। क्या कहीं ब्राह्मणेतर को ऐसी पाठशालाओं में वेद पढ़ाया जाता है? इस पर भागवत जी, अशोक सिंघल जी ने कभी अपने विचार व्यक्त नहीं किये। राम मन्दिर तीन वर्ष में बने या पाँच वर्ष में बने, ये घोषणायें तो करते देर नहीं लगाई जाती, परन्तु काशी में ब्राह्मणेतर को व स्त्रियों को वेद पढ़ाने के लिए कभी कुछ किया? काशी में आर्यसमाज का शानदार उच्च स्तरीय कन्या गुरुकुल वर्षों से चल रहा है। पं. मुरली मनोहर जैसे संस्कृत प्रेमी ने कभी उस कन्या गुरुकुल की उपलब्धियों पर गौरव व्यक्त किया?

विवेकानन्द शिला स्मारक को संघ ने प्रतिमा पूजन से मुक्त करके वहाँ ध्यान केन्द्र की स्थापना की। क्या राम मन्दिर में ध्यान केन्द्र बनेगा या मूर्तिपूजन होगा? राम यज्ञ रचाते रहे। राम मन्दिर में यज्ञ हवन हुआ करेगा अथवा घण्टे घड़ियाल बजा करेंगे? हिन्दू जीवन शैली क्या है? यह गत अस्सी वर्ष में स्पष्ट नहीं किया गया।

ईश्वर एक है या अनेक? वह एकत्र है या सर्वत्र? डॉ. हैडगवार की सुनकर अवतारवाद से हिन्दुओं का पिण्ड क्यों नहीं छुड़वाते? बच्चे को स्वैटर कोट पहनाकर मोटा तो किया जा सकता, परन्तु वह निरोग स्वस्थ तो ब्रह्मचर्य पालन व व्यायाम से ही बनेगा। लव जिहाद का शोर हमने सुना। हिन्दू लड़कियों को बचाने, उन्हें पुनः बसाने के लिए क्या सोचा? आज पर्यन्त अन्धविश्वास के उन्मूलन तथा कुरीति निवारण के लिए संघ व संघ परिवार ने तिनका नहीं तोड़ा। कोई आन्दोलन नहीं छेड़ा। गीता कर्मण्यता का सन्देश है तो फिर नदी स्नान से पाप क्षमा हिन्दू जीवन शैली कैसे हो गई? प्रभु सब कुछ देने वाला जगत् का स्वामी है तो देश के विभिन्न हिन्दू भगवानों को स्वर्ण मुकट तथा मूल्यवान् सिंहासन किस लिए भेंट चढ़ाये जाते हैं? संघ के नेता अब सांसदों को काली टोपी पहना कर प्रवचन देकर मीडिया के सामने आते हैं। राजनीति तो परिवर्तनशील है। प्रवचन कब तक चलेंगे? हम जाति हित, देश हित तथा आपके हित में यह चाहते हैं कि जातीय रोगों के निवारण के लिए कुछ ठोस रचनात्मक आन्दोलन छेड़कर आगे बढ़ो। 'लव जिहाद' का उन्मूलन क्या आपने कर दिया? इस विषय में मौन धारण क्यों?

भ्रामक और विषैला प्रचारः- सन् १९७८ से बहुत ही योजनाबद्ध ढंग से ऋषि जीवन को प्रदूषित करने का एक स्वयम्भू विद्वान् महापुरुष ने अभियान छेड़ दिया। बड़ी चतुराई से आर्य विद्वानों, साहित्यकारों, विशेष रूप से पं. लेखराम जी की खोज व ऊहा का अवमूल्यन करने का षड़यन्त्र रचा गया। श्री देवेन्द्र बाबू का प्रयास व सेवायें प्रशंसा योग्य हैं, परन्तु उनकी आड़ लेकर पं. लेखराम जी को नीचा दिखाने की कुचाल की पोल अब खोलना आवश्यक है। दुस्साहस यहाँ तक किया गया कि श्री डेविस तथा सी.एफ. एण्ड्रूज द्वारा ऋषि पर लिखे गए लेख को तो अपूर्व घोषित करने का फतवा मिल गया- ''भारतीय लेखकों में दयानन्द के विचारों को समझने की क्षमता तथा उनके मन्तव्यों की सही पकड़ जैसी देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, श्री अरविन्द तथा साधु टी.एल. वासवानी में दिखाई देती है, वैसी किसी अन्य आर्यसमाजी लेखक में हमें नहीं मिली।''

यह कथन एक काला झूठ व शुद्ध गप्प है। देवेन्द्र बाबू से कई भूलें हुईं। श्री हरबिलास शारदा तथा दयालमुनि जी, लक्ष्मण जी ने वे सुधार दीं। श्री अरविन्द अन्त तक काली की पूजा को मानते थे। क्या वे ऋषि दयानन्द के दर्शन को मानकर उस पथ पर चल पड़े? उनकी सुपर मेन फिलासफी पर क्या कहा जाए? श्री वासवानी के मीरा स्कूल के बच्चे उनसे लेखनी का स्पर्श करवाकर परीक्षा में बैठते थे। क्या यह अन्धविश्वास था या ऋषि का दार्शनिक चिन्तन? क्या पं. शिवशंकर, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय, पं. गणपति शर्मा, स्वामी वेदानन्द, श्री पं. चमूपति, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी सत्यप्रकाश, पं. रामचन्द्र देहलवी आदि से इन लोगों ने ऋषि को अधिक समझा? जो जानें वार गये, उन्होंने तो समझा नहीं और जो अपनी साम्प्रदायिक डगर पर चलते रहे, उन्होंने इन दिलजले आर्य विद्वानों से ऋषि को अधिक समझा! इस फतवे की शव परीक्षा करनी पड़ेगी। हाँ! हमारे पूर्वजों का इतना अपमान तिरस्कार!

-वेद सदन, अबोहर, पंजाब

जो नित्य पदार्थों में नित्य और स्थिरों में भी स्थिर परमेश्वर है, उस समस्त जगत् के उत्पन्न करने वाले परमेश्वर की प्राप्ति और योगाभ्यास के अनुष्ठान से ही ठीक-ठीक ज्ञान हो सकता है, अन्यथा नहीं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२५

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम–**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या–**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम–**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,
जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या–**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन–जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए 'आस्था–भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग–यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था–भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था–भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद–प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था–भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था–भजन' (चैनल) डिश–टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा–स्काई, वीडियोकोन, बिग–टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार–बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक–धर्म के प्रचार–प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.....

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१८५.	श्वसन क्रियाएं एवं प्राणायाम (सी.डी.)	४०.००
१८६.	मोटापा (सी.डी.)	४०.००
१८७.	योगनिद्रा (सी.डी.)	३०.००
१८८.	ध्यान (सी.डी.)	३०.००
१९९.	योगनिद्रा (कैसेट)	३०.००
१९०.	ध्यान (कैसेट)	३०.००

श्री रावसाहब रामविलास शारदा

१९१.	आर्य धर्मेन्द्र जीवन (सजिल्द) (स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र)	१००.००

डॉ. रामप्रकाश आर्य

१९२.	महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन एवं उनकी हिन्दी रचनाएं)	२५०.००

महर्षि गार्ग्य

१९३.	सामपद संहिता सजिल्द (पदपाठः)	२५.००

डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा

१९४.	वेदार्थ विमर्शः (वेदार्थ पारिजात खण्डनम्)	२५.००
१९५.	डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (बढ़िया)	५१.००
१९६.	डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (साधारण)	३१.००

महामहोपाध्याय पं. आर्यमुनि

१९७.	वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (प्रथम भाग)	१६०.००
१९८.	वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (द्वितीय भाग)	१६०.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१९९.	महाभारत आर्य टीका (प्रथम भाग)	
२००.	महाभारत आर्य टीका (द्वितीय भाग)	

Prof. Tulsi Ram

201.	The Book Of Prayer (Aryabhivinaya)	35.00
202.	Kashi Debate on Idol Worship	20.00
203.	A Critique of Swami Narayan Sect	20.00
204.	An Examination of Vallabha Sect	20.00
205.	Five Great Rituals of the Day (Panch Maha Yajna Vidhi)	20.00
206.	Bhramochhedan (New Edition)	25.00
207.	Bhranti Nivarana	35.00
208.	**Atmakatha**- Swami Dayanand Saraswati	20.00
209.	Bhramochhedan	5.00
210.	Chandapur Fair	5.00

DR. KHAZAN SINGH

211.	Gokaruna Nidhi	12.00

DEENBANDHU HARVILAS SARDA

212.	Life of Dayanand Saraswati	200.00

SWAMI SATYA PRAKASH SARASWATI

213.	Dayanand and His Mission	5.00
214.	Dayanand and interpretation of Vedas	5.00
२१५.	पवित्र धरोहर (सी.डी.)	५१.००

आचार्य उदयवीर शास्त्री

२१६.	जीवन के मोड़ (सजिल्द)	२५०.००

अन्य लेखकों के ग्रन्थ–निम्न पुस्तकों पर कमीशन देय नहीं है ।

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य

श्री गजानन्द आर्य

२१७.	वेद सौरभ	१००.००
२१८.	Gokarunanidhi (Eng.)	२५.००

डॉ. सुरेन्द्र कुमार (भाष्यकार एवं समीक्षक)

२१९.	मनुस्मृति	३००.००
२२०.	महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति	१५०.००

सत्यानन्द वेदवागीशः

२२१.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (उत्तरखण्ड)	३००.००
२२२.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (पूर्वखण्ड)	३५०.००

डॉ. वेदपाल सुनीथ

२२३.	माध्यन्दिन शतपथीय यूप ब्राह्मणों का भाष्य (अजिल्द)	५०.००
२२४.	शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य(अजिल्द)	७०.००
२२५.	शतपथीययूप ब्राह्मण का भाष्य एवं शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य (सजिल्द)	१५०.००
२२६.	यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (विशिष्ट संस्करण)	५०.००
२२७.	यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (साधारण संस्करण)	२५.००

आचार्य सत्यव्रत शास्त्री

२२८.	उणादिकोष	८०.००
२२९.	दयानन्द लहरी	५०.००

प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार

२३०.	वेदाध्ययन (भाग–१)	६.००
२३१.	वेदाध्ययन (भाग–२)	७.००
२३२.	वेदाध्ययन (भाग–१०)	६.००
२३३.	प्रार्थना सुमन	४.००
२३४.	ईश्वर! मुझे सुखी कर	
२३५.	कौन तुझको भजते हैं?	८.००
२३६.	पावमानी वरदा वेदमाता	९.००
२३७.	प्रभात वन्दन	६.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य

२३८.	भक्ति भरे भजन	११०.००
२३९.	विनय सुमन (भाग–३)	६.००
२४०.	वेद सुधा	८.००
२४१.	वेद पढ़ो और पढ़ाओ	१००.००
२४२.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–२)	६.००
२४३.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–३)	५.००
२४४.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–४)	९.००
२४५.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–५)	६.००
२४६.	Quest for the Infinite	20.00
२४७.	वैदिक आदर्श परिवार (बड़ा आकार)	१५०.००

श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु

२४८.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–१)	
२४९.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–२)	१६०.००
२५०.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–३)	१७०.००
२५१.	अमर कथा पं. लेखराम	६०.००
२५२.	कवि मनीषी पं. चमूपति	१६०.००
२५३.	कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में	२००.००
२५४.	निष्कलंक दयानन्द	१६०.००
२५५.	मेहता जैमिनी	१५०.००
२५६.	कुरान वेद की छांव में	१५०.००
२५७.	जम्मू शास्त्रार्थ	३०.००
२५८.	महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव	२०.००
२५९.	श्री रामचन्द्र के उपदेश	२५.००
२६०.	धरती हो गई लहुलुहान	३०.००

विविध ग्रन्थ

२६१.	नित्यकर्म विधि तथा भजन कीर्तन	२०.००
२६२.	उपनिषद् दीपिका	७०.००
२६३.	आर्य समाज के दस नियम	१०.००

२६४. मद्यनिषेध शिक्षित शतकम्	१५.००
२६५. आर्यसमाज क्या है ?	८.००
२६६. जीवन का उद्देश्य	२०.००
२६७. वेदोपदेश	३०.००
२६८. सत्यार्थ प्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन	२०.००
२६९. भगवान् राम और राम–भक्त	२५.००
२७०. जीवन निर्माण	२५.००
२७१. १०० वर्ष जीने के साधन नित्यकर्म	२५.००
२७२. दयानन्द शतक	८.००
२७३. जागृति पुष्प	८.००
२७४. त्यागवाद	२५.००
२७५. भस्मान्तं शरीरम्	८.००
२७६. जीवन मृत्यु का चिन्तन	२०.००
२७७. ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप	१०.००
२७८. कर्म करो महान बनो	१४.००
२७९. अष्टाध्यायी सूत्रपाठ	५०.००
२८०. आनन्द बहार शायरी	१५.००
२८१. वैदिक वीर गर्जना	२५.००
२८२. पर्यावरण विज्ञानम्	२०.००

DR. HARISH CHANDRA

283	The Human Nature & Human Food	12.00
284.	Vedas & Us	15.00
285.	What in the Law of Karma	150.00
286.	As Simple as it Get	80.00
287.	The Thought for Food	150.00
288.	Marriage Family & Love	15.00
289.	Enriching the Life	150.00

डॉ. वेदप्रकाश गुप्त

२९०. दयानन्द दर्शन	६०.००
२९१. Philoshophy of Dayanand	150.00
२९२. महर्षि दयानन्द का समाज दर्शन	२०.००
————————	
२९३. आर्य सिद्धान्त और सिख गुरु	६०.००
२९४. आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण (आचार्य सत्यजित् जी)	४०.००
२९५. सत्यासत्य निर्णय	२५.००
२९६. कलैण्डर–गायत्री मन्त्र, सन्ध्या सुरभि, महर्षि दयानन्द की शिक्षाएँ–प्रत्येक	२५.००
२९७. ओ३म् का स्टीकर	१०.००

भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए आगे आएँ

केसरगंज, अजमेर स्थित परोपकारिणी सभा नेपाल–भारत में भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए अपना राहत दल भेज रही है। जैसा कि विदित है, पिछले दिनों आए भूकम्प से वहाँ अपार जन–धन की हानि हुई है और विपत्तियों में फँसे लोगों को तुरन्त सहायता की आवश्यकता है।

सभा के कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर जी ने बताया कि सभा के तीन उद्देश्यों में से एक दीन–दु:खी मानव की सेवा करना है, इन्हीं उद्देश्यों को लेकर आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने १८८२ ई. में सभा की स्थापना की थी, अत: दीन–दुखियों की सेवा के लिए संस्था ऐसी प्राकृतिक आपदाओं में अपने पूरे सामर्थ्य से राहत कार्य करती रही है।

अपने पिछले राहत कार्य में सभा ने जून २०१३ की बाढ़ में नष्ट हुए उत्तराखण्ड में अपने ७ कार्यकर्ताओं (गुरुकुल के ब्रह्मचारियों) का दल भेजा था, जिसने रुद्रप्रयाग और गुप्तकाशी के आसपास २५–३० किमी. के दायरे में एक महीने तक पैदल घूम–घूमकर लोगों तक लाखों रुपयों की सहायता पहुँचाई थी। इसी प्रकार ओड़िशा, गुजरात आदि की प्राकृतिक आपदाओं में भी सभा यथासामर्थ्य सहायता पहुँचाती रही है।

सभा अब नेपाल में आए भूकम्प में अपना राहत दल भेजने जा रही है, ताकि पीड़ित लोगों तक शीघ्र सहायता पहुँचाई जा सके। सभा का आय का मुख्य स्रोत आप लोगों से प्राप्त होने वाला दान ही है, अत: सभा का आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अधिक–से–अधिक राशि इस निमित्त दान दें, ताकि भूकम्प पीड़ितों की अधिक–से–अधिक सहायता–सेवा की जा सके। सभा को दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के तहत करमुक्त है। आप अपना सहयोग कार्यालयीन समय में सभा के केसरगंज स्थित कार्यालय में अथवा दिन में किसी भी समय ऋषि उद्यान में जमा करवा सकते हैं।

ऊमर काव्य

- ऊमरदान लालस

राजस्थान के गौरव राजस्थानी भाषा के कवि उमरदान जी का अमर काव्य हमें परोपकारिणी सभा के सम्माननीय सदस्य डॉ. खेतलखानी जी की कृपा से प्राप्त हुआ। इस पुस्तक का तीसरा संस्करण १९३० में प्रकाशित हुआ था। इसमें उमरदान जी की अनेक रचनाओं का संग्रह है। इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या ६० से ९४ तक 'दयानन्द री दया' नाम से उनकी रचना प्रकाशित है। कवि और काव्य दोनों ही महत्त्वपूर्ण होने से पाठकों के लाभार्थ दयानन्द दर्शन को प्रकाशित कर रहे हैं। यह एक इतिहास का भाग है। पाठक लाभ उठा सकेंगे। **- सम्पादक**

पिछले अंक का शेष......

दोहा

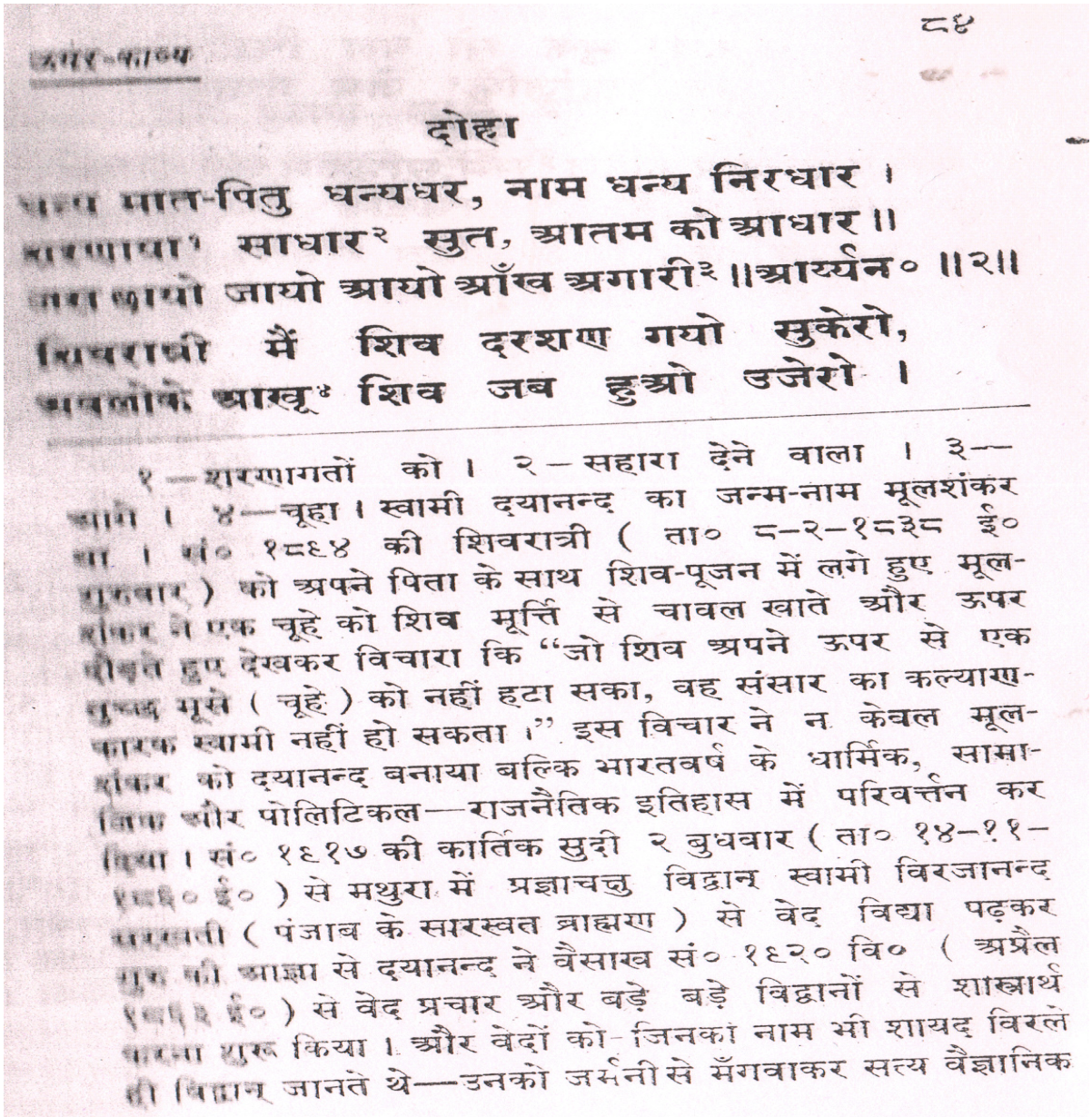

[illegible] मात-पितु धन्यधर, नाम धन्य निरधार ।
[illegible][1] साधार[2] सुत, आतम को आधार ॥
[illegible] जायो आयो आँख अगारी[3] ॥आर्य्यन० ॥२॥
[illegible] मैं शिव दरशण गयो सुकेरो,
[illegible] आखू[4] शिव जब हुओ उजेरो ।

१—शरणागतों को । २—सहारा देने वाला । ३—[illegible] । ४—चूहा । स्वामी दयानन्द का जन्म-नाम मूलशंकर [illegible] । सं० १८९४ की शिवरात्री (ता० ८-२-१८३८ ई० [illegible]) को अपने पिता के साथ शिव-पूजन में लगे हुए मूलशंकर ने एक चूहे को शिव मूर्त्ति से चावल खाते और ऊपर [illegible] हुए देखकर विचारा कि "जो शिव अपने ऊपर से एक [illegible] मूसे (चूहे) को नहीं हटा सका, वह संसार का कल्याण-[illegible] स्वामी नहीं हो सकता ।" इस विचार ने न केवल मूलशंकर को दयानन्द बनाया बल्कि भारतवर्ष के धार्मिक, सामा[illegible] और पोलिटिकल—राजनैतिक इतिहास में परिवर्त्तन कर [illegible] । सं० १९१७ की कार्तिक सुदी २ बुधवार (ता० १४-११-[illegible] ई०) से मथुरा में प्रज्ञाचक्षु विद्वान् स्वामी विरजानन्द [illegible] (पंजाब के सारस्वत ब्राह्मण) से वेद विद्या पढ़कर [illegible] आज्ञा से दयानन्द ने वैसाख सं० १९२० वि० (अप्रैल [illegible] ई०) से वेद प्रचार और बड़े बड़े विद्वानों से शास्त्रार्थ [illegible] शुरू किया । और वेदों को-जिनका नाम भी शायद विरले ही [illegible] जानते थे—उनको जर्मनी से मँगवाकर सत्य वैज्ञानिक

यह अँधाधुन्ध परिपाटी महा अँधेरो,
घर त्याग नोसर्‌यो घनानन्द[1] को घेरो[2] ॥

दोहा

नैष्ठिक[3] ब्रह्मचारी निपुण. भयो सन्यासी भूर ।
इकदम आर्यावर्त्त को. दुख कीनो सब दूर ॥
अति उत्तम आयु अपनी आय उधारी[4] ॥आर्यन०॥३॥

उद्धारक आर्यावर्त्त बोर अगवानो,
गुरु बिरजानन्द[5] समीप गयो ब्रह्म ज्ञानो ।
प्रभु पाणिनीय व्याकरण प्रमाण प्रमानी,
पढ़ महाभाष्य अभ्यास पिछान पिछानो ॥

- और आध्यात्मिक भाष्य करके सायण, महीधर आदि के असंभव अशुद्ध अश्लील अर्थों से लोगों को बचाया । जिससे वेदों का महत्व फिर से चमक उठा और इसे ईश्वरीय ज्ञान और सर्व संसार के धर्मों का आदि श्रोत (Fountain-head "वेदोऽखिलो धर्म मूलम्") होने का लोगों को निश्चय हो गया । इसीसे स्वामीजी कृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ग्रंथ कलकत्ता प्रयाग आदि के विश्वविद्यालयों (यूनिवर्सिटिज) में एम. ए., बी. ए, कोर्स तक में पढ़ाया जाता है। १—अत्यन्त आनन्द । २—झुण्ड । ३—अखण्ड । ४— सुधारी । ५—स्वामी दयानन्द के गुरु जो प्रज्ञाचक्षु (अन्धे) थे ।

दोहा

पद पदार्थ सम्बन्ध पुनि, प्रत्यय आगम लोप ।
आरस[१] पोरस[२] शुभ अशुभ, ग्रन्थ हृदय धर गोप[३] ॥
बेदन की बेदन[४] भेदन भली बिचारी ॥ आर्य्यन० ॥४
बेदोपबेद ब्राह्मण बिधि युक्त बिभ्यासे[५] ,
आगम रु निगम व्याख्यान बिधान अभ्यासे ।
पंडित हुय सत्यासत्य प्रमान प्रकासे,
निज बल तें नित्यानित्य निदान[६] निकासे ॥

दोहा

सांगोपांग[७] हि स्वर सहित, अक्षर शुद्ध उचार ।
श्रोत[८] स्मार्त[९] सुधार किये, आर्यावर्त्त उधार ॥
वेदों[१०] की व्याख्या बिमल करी बलिहारी ॥ आर्यन० ॥५
गोतम सो गरबो[११] न्याय माझ निरधार्‌यो,
बेदान्त शास्त्र बिच बेदव्यास सम सार्‌यो ।

१—ऋषि रचित । २—मनुष्य रचित । ३—गुप्त । ४—पीड़ा। ५—प्रकटे। ६—तात्पर्य, सिद्धान्त । ७—पूरा, यथार्थ। ८—वेदधर्मी। ९—स्मृति अनुसार चलने वाले। १०—वेद चार हैं—ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। वेद शब्द का अर्थ है "ज्ञान" या जानना। वेदों को हिन्दू (आर्य) जाति सबसे प्राचीन ग्रंथ ही नहीं मानती बल्कि इनको अनादि काल से मानती है। यूरोपीय विद्वानों की धारणा है कि वेद ईसामसीह के जन्म से आठ हज़ार वर्ष पहले रचे गये थे और संसार भर में ऋग्वेद से प्राचीन कोई ग्रन्थ नहीं है। ११—गहरा।

वैशेषिक में कण[1] भुक सो बल बिस्तार्‌यो.
पातंजलि पाठ पतंजलि[2] जेम प्रचार्‌यो ॥

दोहा

सांख्य शास्त्र में कपिल[3] सम, सृष्टिक्रम समझाय।
मीमांसा में जैमिनी,[4] करमकांड[5] करवाय ॥
षटशास्त्रन शिक्षा, शिक्षासहित सुधारो ॥ आ० ॥६॥
सत बक्ता श्रद्धाशील समीक्षक[6] शूरो[7],
पुरुषारथ पूरण प्रेम प्रतिज्ञा पूरो।
दुर्व्यसन दुराग्रह[8] दूषण सौं दृढ़ दूरो,
अनभंग[9] उतंग[10] उमंग न अंग अधूरो ॥

दोहा

जग जीतन की जीव में जगी अखंडित जोति।
दयानंद दिगविजय किय, अपने बल उद्योति ॥
गंभीर गिरा[11] गुणहीण गाढ ग्रब[12] गारी ॥आ०॥७॥

१—आर्यों के पदार्थ विज्ञान (वैशेषिक दर्शन) के निर्माता । २—इन्होंने ऋषि पाणिनी (६०० ई० पूर्व) के सूत्रों पर भाष्य बनाया है। विद्वानों ने ऋषि पतंजली का समय ईसामसीह के १८० वर्ष पूर्व माना है । ३—इनका बनाया सांख्य शास्त्र षड्दर्शन की श्रेणी में माना जाता है। इसमें प्रकृति और पुरुष का निरूपण है। ४—इनके बनाये दर्शन शास्त्र का नाम पूर्व मीमांसा है जिसे "जैमिनि दर्शन" भी कहते हैं। यह कृष्ण द्वैपायन (वेदव्यास) के शिष्य थे । इनके पुत्र सुमन्तु और सुत्वान ने वेद की संहितायें रची हैं । ५—संस्कार, क्रियायें। ६—आलोचक, जांच के साथ हूबहू दर्शाने वाला। ७—वीर । ८—खोटी, रूढ़ी । ९—अटूट । १०—ऊँची । ११—वाणी । १२—घमंड ।

शेष भाग अगले अंक में.....

मुलतान निवासी लिखित–वेद

– घनश्याम गो., मुलतान

[परोपकारी मासिक के भाद्रपद १९६४ में प्रकाशित लेखमाला की यह पहली मणि है। लेखक पौराणिक जगत् के प्रतिष्ठित विद्वान् थे, परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रशंसक थे। ऐतिहासिक महत्त्व की दृष्टि से पाँच दशक पुराना यह लेख पुनः प्रकाशित कर रहे हैं– **सम्पादक**]

कौन ऐसा होगा, जो स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को न जानता होगा? विशेषतया आर्य्यों को तो सदैव स्मृत है एवं उक्त स्वामी जी ने अपने उद्देश्य पूर्ति के लिये आर्य्यसमाज की स्थापना करके स्वप्रतिनिधि श्रीमती परोपकारिणी सभा को स्थापित किया है। जैसा स्वामी जी परोपकार करते रहे हैं, वैसे समाज व सभा भी परोपकार को इष्ट मानते हैं।

पर का अर्थ दूसरा और अपर का अर्थ अपना है। व्यावहारिकावस्था में आत्मा की अपेक्षा शरीर अपर है, तब शारीरिक इन्द्रियजन्य विकारों से आत्म रक्षा करनी परोपकार है और ज्ञानावस्था में शरीर की अपेक्षा आत्मा अपर है, तब आत्मिक विज्ञान बल से यथा विधि धर्म्मार्थ काम मोक्ष की सिद्धि करना परोपकार है तथा यदि एक प्राणी दूसरे प्राणी की सहायता करता है, उसको भी परोपकार कहते हैं। यद्यपि स्व और पर की उक्तरीत्या सहायता करना परोपकार कहाता है, परन्तु वर्तमान में उक्त तीनों प्रकार के परोपकार में से तृतीय को प्रायः परोपकार मानते हैं, यह भारी भूल है, क्योंकि तीनों ही इष्ट की सिद्धि के लिये हेतु पाये जाते हैं।

अस्तु। इस भूल के कारण की खोज करनी उचित है। खोजने पर तीन प्रकार के परोपकारी पाये गये हैं, प्रथम इन्द्रियासक्त, जिनकी प्रवृत्ति स्वशरीर तथा स्वसम्बन्धार्थ है, दूसरे मनोरक्त वे हैं जो अपने शरीर तथा कुटुम्ब से बाहर भी कुछ सहायता करते हैं, परन्तु ये देखा–देखी चलते हैं, जैसे कुत्तों को ही रोटी डालना धर्म्म समझते, कोई वेषधारियों को, कोई किसी को अन्न–धनादि से सुख देना धर्म्म मानते हैं। वे यथायोग्य हैं, वे शरीरबद्ध नहीं और न मनमाने चलते हैं, किन्तु शास्त्रानुसार चलते हैं, परन्तु इनमें भी इतनी त्रुटि प्रत्यक्ष है कि साम्प्रदायिक शास्त्रों के आधीन चल कर पूरा परोपकार नहीं कर सकते, प्रत्युत कभी–कभी परोपकार के स्थान में अनेक अनुपकार कर बैठते हैं। उन तीन दोषों से बचने के लिये स्वामी जी ने उपदेश किया है कि वेद से ही शरीर का आत्मिक और सामाजिक परोपकार करने से पूर्ण परोपकार होता है। आप जानते हैं कि ईसाई, महमदी, बौद्ध, जैन तो वेद को छूते ही नहीं और हिन्दू जो वेद को मानते तो हैं, पर उसके अनुसार चलते कभी नहीं तथा कोई–कोई आर्य्य भी वेद के नाम से केवल प्रीति रखते हैं, इसका बड़ा कारण वेद के भाव को न जानना है। अतएव वेद विषय पर विचार करना सब का धर्म्म समझ यथामति यहाँ कुछ निवेदन करता हूँ।

वेद शब्द–यह 'वेद' संस्कृत भाषा का शब्द है और प्रथम वेदों में आया है, इसलिये बहुत प्राचीन शब्द है।

वेद नावः समुद्रियः। –ऋ. १/२५/७

यहाँ वेद का अर्थ जानना है और– **वेदाहमेतं... तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति।** –य. ३१/१८

यहाँ वेद का अर्थ जानना तथा प्राप्ति करना भी है, क्योंकि परमात्मा को जानने से ही मुक्ति प्राप्त होती है। **'वेदेन रूपे'** (य. १९/७८) वेदेन–ज्ञान से। **'यस्मिन् वेदा निहिता'** (अथ. ४/७/५/६) यहाँ वेद–ऋगादिवेद हैं। **'त्रयो वेदा अजायन्त ऋग्वेद एवाग्नेः।'** (ऐ.ब्रा. ५/५/६) यहाँ वेद–ऋगादि हैं।

'इमे सर्वे वेदाः' (गो.ब्रा. १/२/८) यह भी ऋगादि परक है। **'अधीत्य वेदम्'** (महा. १/१/१/१) महाभाष्य में भी वेद शब्द ऋगादि का वाचक कहा है। **'अनन्ता वै वेदाः'** (तै.ब्रा. ३/१०/११/६/४) यहाँ वेद–वैदिकज्ञान है। **'त्रयीविद्याम्'** (छा. १/१७/१–१०) यहाँ वेद–त्रयीविद्या है। **'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'** (मनु. १) **'श्रुतिस्तु वेदः'** (म. २/१०) मनुस्मृति में वेद–धर्म, श्रुति है। **'वेदः धनम्'** (निघ. २/१०)

ऊपर के प्रमाणों से प्रत्यक्ष है कि ऋग्, यजु., साम. व अथर्ववेद में वेद शब्द ज्ञान तथा लाभ का बोधक है, ब्राह्मण ग्रन्थों में वेद ज्ञान व ऋग्, यजु., साम, अथर्व. चार तथा ऋगादि चतुर्वेदगत त्रयीविद्या है। मनुस्मृति में वेद–धर्म्म तथा ऋगादि चार वेद हैं एवं महाभाष्य में भी वेद–ऋगादि चार वेद हैं, इसलिये पाणिनी मुनि ने विद–सत्ता–होना, विद्लृ–लाभ, विद–ज्ञान अर्थात् विद धातु सत्ता, लाभ, ज्ञान

अर्थ के बोधक से वेद शब्द बनता दिखलाया है।

इसमें सन्देह नहीं कि साधारण ज्ञानादि अर्थों में वेद शब्द भी संघटित होता है, परन्तु विशेषार्थतया ऋगादि चारों वेदों का बोधक वेद शब्द है। उक्त प्रमाणों से आपको विदित हो चुका है कि वेदकाल के उपरान्त आजतक प्राय: वेद शब्द ऋगादि वेदपरक व्यवहृत होता चला आया है। यहाँ पर प्रश्न हो सकता है कि जब वेद में साक्षात् वेद-ज्ञान है तो अब भी सब विद्या को ही वेद कहना चाहिये। ऋगादि को ही नहीं, सब विद्या को वेद कहने में कोई निरोध नहीं, परन्तु ब्राह्मण ग्रन्थों से लेकर आज तक जो ऋगादि को ही वेद से वृद्धव्यवहार करते चले आये हैं, क्योंकर परित्याग किया जावे, विशेष कर ऋगादि भी ज्ञान ही होने से वेद तो हैं ही। हाँ, इतना भेद है कि मानवीय ज्ञान अपूर्ण होने से उस ईश्वरीयज्ञान, परिपूर्ण ज्ञान तथा ऋगादि के समान वेद शब्द का गौरव नहीं रखते।

अमीचन्द

- चांद दीपिका

आज फिर एक अमीचन्द
भटक रहा है दर-दर
अपने खोये अस्तित्व की तलाश में
लोग कहते हैं अमीचन्द
अय्याश,शराबी, आवारा है।
अमीचन्द हर चौखट पर जा
सिर झुकाता है
हर जगह की मिट्टी चन्दन मान
चुपके से माथे पर लगा लेता है।
समाज भी वही
यज्ञशालाएँ भी वही
पर कहीं से कोई
काषायवस्त्रधारी दया का सागर
दयानन्द झांक कर नहीं कहता-
है तो हीरा पर कीचड़ में पड़ा है।
अमीचन्द-
विक्षिप्त अमीचन्द देख रहा है
बड़े-बड़े तामझाम
मठाधीशों के चोंचले
धर्मगरु (तथाकथित) की अय्याशी
कर्णधारो की खामोशी
लुटी अस्मत स्तब्ध खड़ी नारी।
भव्यअट्टालिकाएँ बंगले-कोठी
पाँच सितारा होटल
रेव पार्टीया
जगमगाते माल
अंधेरी झोपड़ियाँ।
छाले भरे पाँव
दो जून रोटी को तरसते किसान
पपड़ाए होंठों
तौलती निगाहों से पूछता है-
है कोई दयानन्द।
जो श्रद्धानन्द, लेखराम बना डाले
अमीचन्द हर वस्तु को निचोड़ कर देखता है
शायद कहीं सारतत्व निकल आऐ
लगता है दयानन्द कहीं सो गया है
कहीं खो गया है
तभी तो आता नहीं
झलक दिखलाता नहीं
घोर घना अन्धकार
भ्रम के मक्कड़जाल
खुदगर्जी के दायरे
घौंस जमाता आतंकी चेहरा
कुछ तो करना पड़ेगा
खुद ही बाती, खुद ही दीपक
तेल बन जाना होगा
स्वयं को गला स्वयं को मिटा
अन्धकार को भेद जगमगाना पड़ेगा।
दयानन्द नहीं तो क्या
अमीचन्द तो है झुझारु सिपाही
गोली जहर सूली के लिए
दयानन्द का एक ही अनुयायी पर्याप्त है
तूफानों के भंवर में
मानवता की डगमगाती किश्ती
निकालने के लिए।

जम्मू तवी

कात्यायन श्रौतसूत्र का अध्यापन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर के महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल में वर्षों से संस्कृत व्याकरण और दर्शनों का अध्यापन कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। इसी क्रम में महर्षि कात्यायन द्वारा प्रणीत **श्रौतसूत्र** (आचार्य कर्क भाष्य सहित) का **आचार्य शक्तिनन्दन मीमांसा तीर्थ** द्वारा १ जुलाई २०१५ से विधिवत् नियमित रूप से अध्यापन कराया जाएगा।

सूत्र ग्रन्थों में प्रसिद्ध **श्रौतसूत्र** ग्रन्थ कर्मकाण्ड को ही मुख्यत: प्रतिपादित करता है, अत: जो कर्मकाण्ड विषयक जिज्ञासु हैं, उनके लिए विशेष उपयोगी है। यह ग्रन्थ २६ अध्यायों में विभक्त है। आधुनिक काल में हम पञ्चमहायज्ञों तक ही सिमट कर रह जाते हैं, पर इस शास्त्र के अध्यापन से अन्य अनेक यज्ञ, जैसे- दशपूर्णमास-चातुर्मास्यादि का स्वरूप समझने का अच्छा अवसर प्राप्त होगा। यह ग्रन्थ लगभग ६ मास में सम्पूर्ण हो जाएगा।

इस काल में ऋषि उद्यान में प्रतिदिन यज्ञोपरान्त उपदेश व प्रवचन का लाभ भी प्राप्त हो सकेगा तथा विभिन्न समयों पर विविध विषयों पर विद्वानों द्वारा कक्षाएँ भी होती रहेंगी। ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास और भोजन व्यवस्था नि:शुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार सहयोग कर सकते हैं। माताओं व बहनों के निवास की व्यवस्था पृथक् रहेगी।

सम्पर्क सूत्र - स्वामी विष्वङ् परिव्राजक- ०९४१४००३७५६ **समय**- सायं ५.३० से ६.०० बजे तक।

पता - ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर-३०५००१ (राज.)

email : psabhaa@gmail.com

वैदिक साहित्य पर विशेष छूट

दानी महानुभावों के विशेष सहयोग से वैदिक पुस्तकालय, अजमेर द्वारा प्रकाशित रु. १६३५/- मूल्य की निम्नलिखित पुस्तकों का एक सैट ग्राहकों को आधे मूल्य (५० प्रतिशत) में अर्थात् रु. ८१७/- में दिया जा रहा है। पुस्तकों को डाक द्वारा मँगाने पर डाक व्यय के रु. १८३/- अतिरिक्त सहित कुल राशि रु. १०००/- में ग्राहकों को देय होगा।

पुस्तकों के सैट उपलब्धता रहने तक प्राथमिकता के आधार पर देय होंगे।

क्र. सं.	पुस्तक सं.	पुस्तक का नाम		मूल्य
१.	१२	ऋग्वेद भाषा भाष्य-१२ पुस्तक-१ सैट		६१०.००
२.	२	यजुर्वेद भाषा भाष्य-२ पुस्तक-१ सैट		४७५.००
३.	३	दयानन्द ग्रन्थमाला-३ पुस्तक- १ सैट		५५०.००
	१७		**योग**	**१६३५.००**

पुस्तकें मँगाने हेतु धनराशि-एम.ओ., डिमाण्ड ड्राफ्ट या ऑनलाईन द्वारा
खातेदार-वैदिक पुस्तकालय, अजमेर
बचत खाता संख्या- 0008000100067176,
बैंक- पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर
आई.एफ.एस.सी. संख्या PUNB 0000800 के माध्यम से भेज सकते हैं।

तर्क के बिना कोई भी विद्या किसी मनुष्य को प्राप्त नहीं होती और विद्या के बिना पदार्थों से उपयोग भी कोई नहीं ले सकता। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५६**

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ मई २०१५ तक)

१. श्री किशोर काबरा, अजमेर २. श्री देवमुनि, अजमेर ३. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ४. श्रीमती कमला देवी, अजमेर ५. श्री वरधीचन्द्र गुप्त, जयपुर, राज. ६. श्री अशोक पंसारी/श्रीमती अन्जना पंसारी, अजमेर ७. श्री सुभाष नवाल व श्रीमती रमा नवाल, अजमेर ८. श्री देशबन्धु गुप्ता, पंचकुला, हरियाणा ९. श्री ऋषभ गुप्ता, अम्बाला केन्ट, हरियाणा १०. स्वस्तिकाम: चैरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महा. ११. श्री करण सिंह १२. श्री शरतचन्द्र, दिल्ली १३. श्री मेजर रतन सिंह यादव, रेवाड़ी, हरियाणा

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ मई २०१५ तक)

१. तनीश शर्मा, अजमेर २. श्री देवमुनि, अजमेर ३. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ४. श्री अचरद व फ्लोरिकलचरल, अजमेर ५. श्रीमती कमला देवी, अजमेर ६. श्री वरधीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. ७. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज. ८. श्री तुलसी राम नामवाल, अजमेर ९. श्री महेन्द्र कुमार, अम्बेडकर नगर, उ.प्र. १०. श्री किशनकुमार आर्य, हनुमानगढ़, राज. ११. श्री कैप्टेन चन्द्रप्रकाश त्यागी व श्रीमती कमलेश त्यागी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड १२. श्री रतनचन्द्र आर्य, नई दिल्ली १३. श्रीमती गीता देवी चौहान, अजमेर १४. श्री प्रेम कुमार वालेचा, दिल्ली

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

नेपाल भूकम्प पीड़ित सहायतार्थ

(१ से १५ मई २०१५ तक)

१. श्रीमती मंजू शर्मा, अजमेर २. श्री प्रसन्नजीत शर्मा, अजमेर ३. श्री हेमन्त शर्मा, अजमेर ४. श्री मथुराप्रसाद जी/श्री सुभाष नवाल, अजमेर ५. श्री अनुपम आर्य, अजमेर ६. श्री सोहनलाल कटारिया, अजमेर ७. जेनीथ एन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली ८.कु. सुमन जैनानी, अजमेर ९. श्रीमती पुष्पलता उपाध्याय, अजमेर १०. श्री जे.के. शर्मा, अजमेर ११. श्री कैलाश जी, अजमेर १२. श्रीमती उष्मा वर्मा, अजमेर १३. श्री सत्येन्द्र आर्य, मेरठ, उत्तरप्रदेश १४. श्री कमलेश पुरोहित, अजमेर १५. श्री विवेक कुमार, सहारापुर, उ.प्र. १६. सुश्री पूर्णिमा महेश्वरी, अजमेर १७. श्रीमती खुशबू व श्रीमती नगिना, अजमेर

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

जो ईश्वर वेदविद्या से अपने सांसारिक जीवों और जगत् के गुण, कर्म्म, स्वभावों को प्रकाशित न करता तो किसी मनुष्य को विद्या और इनका ज्ञान न होता और विद्या वा उक्त पदार्थों के ज्ञान के विना निरन्तर सुख क्यों कर हो सकता है।

–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५४

गीता के व्याख्याकारों से

- स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

इस समय जिस प्रकार अध्यात्म का अनुभव किये बिना ही बहुत से मनुष्यों द्वारा अध्यात्म पर प्रवचन देने की बाढ़ आयी हुई है, उसी प्रकार अध्यात्म पर लेखन की भी बाढ़ आयी हुई है। लेखक अपना बुद्धि-कौशल दिखाने के लिए तथा अपना आधारहीन वर्चस्व स्थापित करने के लिए ऐतिहासिक पुरुषों के नामों की भी आध्यात्मिकतापूर्ण व्याख्या, बिना यह सोचे-विचारे करता है कि इस व्याख्या से अपने उज्ज्वल इतिहास का भी तो विलोप हो जाएगा। जो इतिहास किसी भी जाति की सभ्यता, संस्कृति तथा परम्परा को जीवित रखने में पूर्ण योगदान ही नहीं, अपितु आधारभूमि बनता है, उस अमूल्य इतिहास के नष्ट होने से उस जाति के भविष्य का क्या बनेगा? इतिहास किसी भी जाति के भविष्य निर्माण में आवश्यक घटक बनता है, यदि उस आधारभूत शिला की अन्यथा व्याख्या होगी तो भावी सन्तति, जो इस आधारभूत शिला पर अवस्थित होकर प्रेरणा एवं सम्बल प्राप्त करती है, वह दिशाहीन हो जाएगी।

प्रतीकों के माध्यम से किसी अभिप्राय को अभिव्यक्त करना या किसी को सन्देश देना उत्कृष्ट कोटि की विधा है और इसके आश्रय से सुगमता से किसी भी विषय-वस्तु को समझाया जा सकता है या विचारों का आदान-प्रदान किया जा सकता है, किन्तु जब ऐतिहासिक पात्रों को प्रतीक के रूप में मानकर उनकी व्याख्या होगी तो अतिव्याप्ति दोष से युक्त होने के कारण प्रतीक विधा की गरिमा एवं महिमा तो प्रभावहीन होगी ही, साथ-ही-साथ लोक में या साहित्य में मनमाने ढंग से इसका उपयोग, जिसे हम दुरुपयोग कह सकते हैं, प्रारम्भ हो जाएगा और इतिहास सर्वथा ओझल हो जाएगा।

यद्यपि प्रतीक के माध्यम से व्याख्या करने की विधा अति प्राचीन है। वेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में इस विधा का विशद रूप दृष्टिगोचर होता है और परवर्ती साहित्य-उपनिषद्, रामायण, महाभारत तथा पुराणों में इसका विशेष रूप से पल्लवन एवं संवर्धन हुआ है। शतपथ ब्राह्मण को तो इस विधा का आकर ग्रन्थ ही कहा जा सकता है। विश्व के अन्य देशों में भी इस विधा का न्यूनाधिक रूप में प्रचार-प्रसार दिखाई देता है।

अलंकार के रूप में किसी वस्तु का वर्णन करना अध्येता एवं श्रोता को आकृष्ट करता है, इसलिए अलंकारयुक्त साहित्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अलंकारों में रूपक एवं व्यञ्जना की विधा सर्वप्रचलित है, विशेष करके विद्वन्निकाय में ये विधाएँ अतिप्रिय मानी गई हैं। कठोपनिषद् में रथ के रूपक द्वारा शरीर एवं आत्मा का वर्णन हृदयग्राही है-

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिन्तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।।

-(कठ. १/३/३)

अर्थ- तुम इस शरीर को रथ और जीवात्मा को रथी समझो तथा बुद्धि को सारथि और मन को लगाम जानो।

इसी प्रकार उपासना के समय का वर्णन भी हृदयावर्जक है-

धनुर्गृहीत्वौपनिषदं महास्त्रं, शरं ह्युपासनानिशितं सन्धयीत।
आयम्य तद् भावगतेन चेतसा, लक्ष्यं तदेवाक्षरं सोम्य विद्धि।।

प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत्।।

-(मुण्डक. २/२/३,४)

अर्थ- उपनिषद् प्रतिपादित ओंकार रूप धनुष को ग्रहण कर उस पर तप द्वारा तीक्ष्ण हुए बाण को चढ़ाकर खींच और अविनाशी ब्रह्म को लक्ष्य मानता हुआ उसे बेध डाल। प्रणव धनुष और आत्मा बाण है, ब्रह्म उसका लक्ष्य बताया गया है। उसे अप्रमत्त मनुष्य ही बींध सकता है। बाण से उसके लक्ष्य भेद कर उसी में तन्मय हो जाये।

इस प्रकार के वर्णनों का केवल एक मात्र उद्देश्य यही होता है प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष का बोध कराना या अतिस्पष्ट से अस्पष्ट का बोध कराना, परन्तु यदि इस विधा का ऐतिहासिक घटनाओं के साथ प्रयोग किया जाएगा तो इतिहास नष्ट होगा। जैसे कि आजकल गीता की व्याख्या करते हुए लोग धृतराष्ट्र, संजय, श्रीकृष्ण, अर्जुन, द्रोणाचार्य आदि

नामों की व्याख्या करते हैं। व्याख्या सुनने में तो आकर्षक एवं समीचीन प्रतीत होती है, किन्तु इतिहास का क्या बनेगा, इसका भी ध्यान रखना चाहिए। कर्मयोग की उपेक्षा कर गीता की केवल आध्यात्मिक व्याख्या गीताशास्त्र के साथ अन्याय है। गीता का तो सृजन ही या उद्‌भव ही स्वकर्म से विरक्त महान् धनुर्धर अर्जुन को कर्म में प्रेरित करने के लिए हुआ है, जिसको ध्यान में रखकर लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने गीता-रहस्य नाम की एक बृहद् टीका लिखी है, जो उस समय और स्थल के वातावरण को स्पष्ट अभिव्यक्त करती है। गीता की ऐसी ही पृष्ठभूमि को समझते हुए एक नवयुवक ने विदेश जाते समय अपने साथ गीता ले ली तो उसके पितामह ने कहा कि-अरे, गीता ले जा कर क्या करोगे? यह तो वृद्धावस्था में पढ़ने की वस्तु है। नवयुवक प्रबुद्ध था। उसने बड़ी विनम्रता से अपने पितामह को उत्तर दिया कि दादा जी जिसके लिए गीता का उपदेश दिया गया, क्या वह अर्जुन वृद्ध था? क्या वह किसी पर्णकुटीर में बैठा था? वह तो युद्ध के मैदान में शत्रुओं के मध्य खड़ा था। पुनः गीता वृद्धों के लिए कैसे हो गई? गीता तो युवकों के द्वारा अवश्य ही पढ़ी जानी चाहिए। संसार क्षेत्र में युद्धरत योद्धाओं के लिए ही इसका उपदेश पार्थसारथि योगेश्वर श्रीकृष्ण ने किया है। यह सब सुन कर दादा जी मौन हो गये।

गीता पर वर्तमान में अनासक्त योग, सच्ची गीता, यथार्थ गीता आदि टीकाएँ दिग्भ्रान्त करने वाली हैं। श्रोताओं के समक्ष वक्ता चाहे जो व्याख्यान करें, किन्तु उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का उन्हें परित्याग नहीं करना चाहिए, अन्यथा लोग रामायण की भी इसी प्रकार से मनमानी व्याख्या करेंगे और पाश्चात्य विद्वानों को जो अभीष्ट है कि रामायण और महाभारत काल्पनिक कथाएँ, उपन्यास हैं, ऐतिहासिक नहीं, उनको प्रश्रय मिलेगा। गीता की पृष्ठभूमि के अनुसार ही गीता का भाष्य करते हुए उसकी भूमिका में स्वनामधन्य स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी ने इन्हीं आशंकाओं का आकलन करते हुए स्पष्ट लिखा है कि- महाभारत का युद्ध भारत के इतिहास की एक सच्ची घटना है, कपोल कल्पना नहीं। उस घटना का प्रयोग महाकवि वेदव्यास जी ने मनुष्य को धर्म का सच्चा स्वरूप दिखाने के लिए अपने काव्य में किया है और दैवीय सम्पत्ति की सेना के संचालक का स्वरूप योगिराज कृष्ण को दिया है। भाव कृष्णवार्ष्णेय के, शब्द कृष्णद्वैपायन के, घटना इतिहास की। अहो लोकोत्तरः संगमः।

जगद्‌गुरु भगवत्पाद आदि शंकराचार्य जी ने भी इसी ओर संकेत किया है-

'स्वप्रयोजनाभावेऽपि भूतानुजिघृक्षया वैदिकं धर्मद्वयमर्जुनाय शोकमोहमहोदधौ निमग्नायोपदिदेश गुणाधिकैर्हि गृहीतोऽनुष्ठीयमानश्च धर्मः प्रचयं गमिष्यतीति। तं धर्मे भगवता यथोपदिष्टं वेदव्यासः सर्वज्ञो भगवान्गीताख्यैः सप्तभिः श्लोकशतैरुपनिबन्ध।।'

मेरे विचार से गीता के प्रत्येक भाष्यकार तथा कथावाचक को इस सूत्र का परित्याग नहीं करना चाहिए। इति

- कुलाधिपति, गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोलाझाल, मेरठ

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

यज्ञ आदि व्यवहारों के बिना गृहाश्रम में सुख नहीं होता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५९

अज्ञान से ज्ञान की ओर

- आचार्य शिवकुमार आर्य

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽ सम्भूतिमुपासते।
ततो भूयः इव ते तमो य उ सम्भूत्यां रताः।।

- यजु. ४०.९

(ये) जो (असम्भूतिम्) नाश अथवा मृत्यु की (उपासते) उपासना करते हैं। (अन्धन्तमः) अन्धकार में (प्रविशन्ति) प्रवेश करते हैं। (ये उ) जो (सम्भूत्याम्) संसार में (रताः) रम रहे हैं, (ते) वे (ततः भूय इव तमः) उससे भी अधिक अन्धकार को प्राप्त होते हैं।

उपरोक्त मन्त्र में कतिपय पद विशेष अर्थ का प्रतिपादन करते हैं। यहाँ मुख्य दो पद हैं, सम्भूति तथा असम्भूति। ये दोनों पद एक ही धातु ''भू'' से निष्पन्न हैं, जिनके पूर्व में ''सम्'' उपसर्ग भी प्रयुक्त है, किन्तु इन दोनों पदों का अर्थ सर्वथा विपरीत है। सम्भूति का अर्थ है, जन्म या सृष्टि क्रम तथा असम्भूति का अर्थ विनाश या क्षण भंगुरता है। इन दोनों के अर्थ में इतना अन्तर क्यों है? क्योंकि सम् उपसर्ग नञ् समास के अर्थ को अधिक कह रहा है, तो उसका नकारार्थ ही होगा। एक बिल्कुल सीधे अर्थ को कह रहा है, तो दूसरा उसी अर्थ को उल्टा करके दर्शा रहा है। सचमुच यही दो पद मन्त्र में समझने योग्य हैं। इन्हीं पदों के साथ एक और विशेष बात है और वह यह है कि जो असम्भूति की आराधना करेगा, वह घोर अन्धकार में फँसेगा, परन्तु जो सम्भूति की प्राप्ति की इच्छा करेगा, वह घोर से भी घोर अन्धकार में फँसता जायेगा। इस प्रकार से इन दोनों ही पदों की वास्तविकता का अन्तर स्पष्ट किया जा रहा है। मन्त्र का भाव है कि इन दोनों भावनाओं से भी कोई अन्य वस्तु है, जिसकी उपासना करनी चाहिये, क्योंकि इनमें परस्पर हीन से हीनतर की अवस्था का वर्णन किया है। प्रश्न यह है कि क्या इन दोनों से व्यक्ति को अपना मुख मोड़ लेना चाहिये? इस बात को समझना अत्यावश्यक है।

एक मानवीय प्रवृत्ति है कि वह सदैव जैसा है, जिस अवस्था में है, वैसा ही रहना चाहता है। जो भी उसके हीन या उत्तम जीने के साधन उसके परिवेश में निकट या दूर से सम्बन्धित हैं, उनके अधीन रहने का अत्यन्त इच्छुक है। चाहे शारीरिक अवस्था कैसी भी हो, उसी शरीर में रहने का आग्रही है। इन सबके परिवर्तन से वह बहुत डरता है। इस परिवर्तन को ''असम्भूति'' कहते हैं। इसी नाश को दार्शनिक भाषा में मूल कारण में लय होना कहा है। '**नाशः कारणलयः**' -सांख्यदर्शन सू. -८६। वस्तुतः सृजन का विनाश भी अवश्यम्भावी है। यदि किसी वस्तु में परिवर्तन नहीं होता है अथवा बदलाव नहीं चाहते तो नवीनता कैसे आयेगी, किन्तु दुर्भाग्यवशात् इस परिवर्तन को कुछ लोग क्षण भंगुर भी कहते हैं। इस क्षणिक संसार को युग प्रवर्त्तक माने-जाने वाले लोगों ने इतना कोसा है कि जिसकी कोई गणना नहीं है। बौद्धमत के जन्म दाता महात्मा बुद्ध ने इस संसार को ''क्षणिकं क्षणिकं दुःखम् दुःखम्'' क्षणिक तथा दुःख रूप कहा है। इसी क्षणिक से क्षणिक वाद की नींव रखी गई थी जो कि मानवीय व्यवहार में एक भयंकर विसंगति के रूप में व्याप्त है, फैला हुआ है। दरअसल क्षण तो काल की गणना करने की एक इकाई है, परन्तु क्षणिक वाद या उसका कोई सिद्धान्त नहीं है। इसी प्रकार की एक और मान्यता है, जो कहती है कि संसार मिथ्या है। प्रश्न यह है कि जगत् झूठा है- ऐसी स्थापना करने वाले या वाला स्वयं को जगत् गुरु मानता है या मानते हैं। जब संसार मिथ्या है, तो अर्थापत्ति से यही अर्थ आयेगा कि जब जगत् झूठा है, तो जगत् गुरु भी तत् सम होगा।

इस मान्यता के द्वारा कुछ ऐसे निराधार हेतु दिये जाते हैं, जैसे- सीप में चाँदी, आकाश के पुष्प और रस्सी में सर्प तथा दिवास्वप्नवत्- ये सभी मिथ्या होते हैं। इसी प्रकार संसार भी झूठा है, परन्तु इन बातों के मानने वाले व्यवहार के पटल पर संसार को सत्य ही मान कर व्यवहार करते हैं। इस सन्दर्भ में एक अत्यन्त विचारणीय बिन्दु यह है कि अनेक मान्यताओं के आधार पर यह संसार झूठा है, तो वेदमन्त्र में असम्भूति-विनाश से अधिक सम्भूति को क्यों असम्भूति से अधिक संकटों से भरा कहा है। यदि वेद मन्त्र का यही कथन है, तब तो कोई रास्ता ही नहीं

बचा, जिसका मनुष्य अनुसरण कर सके। यह सब कुछ नश्वर या नष्ट होने वाला है तो किसी भी पदार्थ का संग्रह करना व्यर्थ है- शरीर के साधन- भूमि, भवन, यान-वाहन, वस्त्र, धन-धान्य, औषधि रक्षाकर्म इत्यादि पदार्थों का कोई प्रयोजन ही नहीं है। तब तो ये सब नुपाय हैं अर्थात् उपाय करने योग्य नहीं हैं, किन्तु ऐसा भाव इन पदों का कदापि नहीं है। जैसा कि पूर्व में कह आये हैं, वास्तव में यहाँ दो वस्तुओं की तुलना की जा रही है। एक दूध है, दूसरा जल है। क्या दूध के होने पर पानी नहीं है? या फिर पानी के होने पर दूध नहीं है। पदार्थ दोनों हैं, परन्तु अपेक्षाकृत दूध की गुणवत्ता अधिक है, अत: दूध-दूध है, पानी-पानी है। ये परस्पर एक-दूसरे के अस्तित्व को नष्ट नहीं करना चाहते हैं, न ही इनमें कोई विरोध है। जन्म भी है, मृत्यु भी है। इन दोनों में अन्योन्य भाव है, अर्थात् ये एक दूसरे पर आलम्बित हैं, टिके हुये हैं। जब किसी को प्यास लगती है, तो पानी से ही प्यास बुझती है, दूध से नहीं। जब भूख लगती है या शारीरिक दुर्बलता होती है तब दूध ही काम आता है, वहाँ पानी से कार्य नहीं चलेगा। इस आत्मा को साधन के रूप में मानव शरीर मिला है। अब इस शरीर में अनेक शारीरिक कमजोरियाँ आ चुकी हैं। आगे जीने का शरीर में सामर्थ्य नहीं रहा है, तब शारीरिक कष्टों से मृत्यु ही छुड़ा सकती है। अन्य कोई उपाय नहीं है। इसी बात को ये सम्भूति तथा असम्भूति पद कह रहे हैं। यहाँ नष्ट होता है, ऐसा कोई अर्थ नहीं है। केवल परिवर्तन अवश्य है। अन्यत्र वेद मन्त्र में इसे मृत तथा अमृत के रूप में कहा है। ये उस ईश्वर की दो छाया हैं। एक दिन है, एक रात्रि है। इनमें मिथ्या कोई नहीं है। ये दोनों ही हैं। प्राय: सभी सम्प्रदाय के लोग संसार से घृणा करने का उपदेश करते हैं, चाहे वे ईसाई हों, चाहे जैन, चाहे बौद्ध हों, चाहे अन्य पौराणिक मतमतान्तर के कोई भी लोग हों। वे सभी संसार से विरक्त होने का राग अलापते हैं। प्रश्न है कि जब संसार असार है, तो ईश्वर ने इसकी रचना क्यों की? यदि ये कल्पनायें सभी सत्य हैं तो बनाने का प्रयोजन नहीं है। इस संसार के सम्बन्ध में तनिक विचार करना चाहिये कि यह जगत् क्या है? संसार एक बदलता हुआ सत्य है। जो दृश्य हमने कल देखा था, वह आज नही है, परन्तु जो दृश्य आज दिखाई दे रहा है, उसे हम सत्य नहीं कह सकते हैं। एक उदाहरण से इस बात को समझिये। किसी पेड़ पर एक कबूतर बैठा था, किन्तु आज वह उस पेड़ पर नहीं है। क्या उस कबूतर की जो उस वृक्ष पर बैठने रूपी क्रिया हुई थी, वह असत्य है? नहीं, उसे असत्य नहीं कहा जा सकता है। अब पहले इस ब्रह्माण्ड में कितनी सृष्टियाँ हो चुकी हैं और यहाँ अपने कर्मानुसार मनुष्य कितनी बार जन्म-मरण को प्राप्त हो चुके हैं। इसी प्रकार से अनेक पदार्थ हमारे देखते-देखते तिरोभूत (विलुप्त) हो चुके हैं और नये-नये बहुत प्रकार के हो रहे हैं। मनुष्य के जीते-जागते अनेक प्रकार के परिवर्तन हो रहे हैं। इन्हीं बातों को सिद्ध करने के लिए ऋग्वेद का एक मन्त्र भाग है- "**ऋतञ्च सत्यञ्च**" अर्थात् ऋत् और सत्य इन शाश्वत धाराओं से इस सृष्टि का निर्माण किया। ऋत का अर्थ है- जो ध्रुव, अचल अपरिवर्तन शील है और सत्य का अर्थ जो बदलता हुआ है। परिवर्तनशील सत्य है। यह भी परिवर्तन विधि के विधान में है। जिस असम्भूति को नाश के रूप में कहा जा रहा है, सम्भूति जो वर्तमान है तथा असम्भूति जो भविष्यत् है, ये दोनों ही पदार्थ हैं। एक उस परिवर्तन को लेकर चिन्तित है और जो विद्यमान पदार्थ है, उसकी उपेक्षा या निन्दा कर रहा है तथा दूसरा वर्तमान को ही सब कुछ मान कर निश्चित है। उसे नष्ट या परिवर्तन की कोई फिक्र नहीं है। इसी प्रकार से एक वेद मन्त्र में अन्यत्र कहा है कि यह शरीर या संसार पीपल के पत्ते के समान है, अर्थात् अस्थायी, अल्पसमय तक रहने वाला है। इसके विपरीत दूसरे मन्त्र में कहा है कि "**अस्मा भवतु नस्तनू:**" अर्थात् हमारा शरीर दृढांग- मजबूत अंगों वाला हो। इन दो प्रकार की बातों से वेद वाक्यों में विरोधाभास जैसा झलकता है, परन्तु ऐसा कतई नहीं है कि यह अन्यथा कथन है, क्योंकि यहाँ पूर्व की बातों का ही स्पष्टीकरण है। अत: जो महानुभाव इस विचित्र सृष्टि के ईश्वर रचित पदार्थों को तथा दोनों अवस्थाओं में सम्यक् रूप से, ज्ञान के साथ जीवन तथा मृत्यु के इस परम रहस्य को समझकर जीयेगा तथा समय पर छोड़ेगा, उसका वह जीवन सफल होगा। इति।

- महर्षि कपिल आर्ष गुरुकुल (वैदिक आश्रम), कोलायत, बीकानेर, राज. चलभाष- ९४१३१४४०२९, ९१६६३२३३८४

जिज्ञासा समाधान - ८८

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा १ - मैं परोपकारी का नियमित पाठक हूँ। मेरी एक शंका है। परमात्मा ने सृष्टि के आदि में वेद ज्ञान चार ऋषियों को ही क्यों दिया? सिर्फ १ या २ या ३ को देते तो नहीं चल सकता था क्या? केवल एक ही ऋषि के हृदय में चारों वेद नहीं समा सकते थे क्या? कृपया, आप मेरी शंका का समाधान परोपकारी पत्रिका में करने की कृपा करें।

- रणवीर आर्य, म.नं. ११-६६/४८५, अर्बन कॉलोनी, भोंगीर, नलगोण्डा, तेलंगाना-५०८११६

समाधान- समूचे संस्कृत साहित्य में वेद का गरिमामय स्थान है। ऋषियों ने वेद को ही सर्वोच्य प्रमाण माना है, क्योंकि वेद साक्षात् परमेश्वर का ज्ञान है। इस आर्यावर्त्त देश में प्राचीन काल से धर्माधर्म का निर्णय वेद के आधार पर ही होता रहा है। महर्षि मनु उद्घोषणा करते हैं कि एक ओर वेदज्ञ अकेला हो और दूसरी ओर अवेदज्ञ हजारों, करोड़ों भी क्यों न हों, धर्मनिर्णय में वेदज्ञ ही प्रमाण है, वेदज्ञ की ही बात मान्य है-

एकोऽपि वेदविद्धर्मं यं व्यवस्येद् द्विजोत्तमः।
स विज्ञेयः परो धर्मो नाज्ञानामुदितोऽयुतैः।।

- मनु. १२.११२

महर्षि मनु वेद के विषय में यह भी कहते हैं-

चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक्।
भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति।।

- मनु. १२.९०

अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र- ये चार वर्ण और इनकी व्यवस्था, पृथ्वी, आकाश एवं द्युलोक अर्थात् समस्त लोक, ग्रह आदि, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास- इन चारों आश्रमों के पृथक्-पृथक् विधान और भूत, भविष्यत्, वर्तमान - इन तीनों कालों की सत्य विद्या, ये सब वेदों से ही प्रसिद्ध, प्रकट और ज्ञात होती हैं, अर्थात् इन सब व्यवस्थाओं और विद्याओं का ज्ञान वेदों के द्वारा ही होता है।

महर्षि की मान्यता है कि वेद का ज्ञाता ही सेनाओं का संचालन कर सकता है, राज्य का संचालन कर सकता है, न्याय व्यवस्था का संचालन कर सकता है और समस्त भूमण्डल के चक्रवर्ती राज्य तक का संचालन कर सकता है-

सैनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च।
सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति।।

-मनु. १२.१००

ऐसा महर्षि मनु इसलिए मानते हैं, क्योंकि उनकी दृष्टि में वेद सर्वज्ञानमय अर्थात् समस्त विद्याओं का भण्डार है। परम्परा से यद्यपि वेद और स्मृति- ये दोनों ही अपने-अपने स्थान पर प्रमाण हैं, फिर भी यदि दोनों की बातों में विरोध दिखता है तो वहाँ स्मृति को छोड़ वेद की बात मान्य है, क्योंकि वेद सर्वज्ञ परमेश्वर के द्वारा बनाये हुए हैं।

इस समस्त ज्ञान के भण्डार वेद के ज्ञान को आदि सृष्टि में परमात्मा ने चार ऋषियों को दिया। महर्षि अग्नि को ऋग्वेद का ज्ञान, महर्षि वायु को यजुर्वेद का ज्ञान, महर्षि आदित्य को सामवेद का ज्ञान व महर्षि अङ्गिरा को अथर्ववेद का ज्ञान दिया, क्योंकि ये ही उस समय की सबसे पवित्र आत्माएँ थीं। इन चार ऋषियों को दिये ज्ञान को देखकर आपकी जिज्ञासा है कि यह ज्ञान दो ऋषियों, तीन या एक ही को क्यों नहीं दे दिया गया? इस पर हमारा कहना है कि ऐसा हो सकता था कि दो, तीन या एक ही ऋषि को परमात्मा वेद का ज्ञान दे देते, किन्तु ऐसा होने पर फिर कोई जिज्ञासा करता कि वेद तो चार हैं, इनका ज्ञान दो, तीन या एक ऋषि को ही क्यों दिया, चार को क्यों नहीं दिया? कितना अच्छा होता कि एक का लाभ न कर चार-चार का लाभ करता अथवा वेद के एक-एक मण्डल का ज्ञान, एक-एक काण्ड का अथवा एक-एक अध्याय का ज्ञान एक-एक अर्थात् भिन्न-भिन्न ऋषियों को क्यों नहीं दिया? यदि दे देता तो अधिकों का लाभ होता आदि अनेक जिज्ञासाएँ और कोई खड़ी कर सकता है। जैसी जिज्ञासा चार ऋषियों को ज्ञान देने पर बनी है, वैसी ही जिज्ञासा कोई दो, तीन अथवा एक ऋषि को ज्ञान देने पर भी कर सकता है।

इसलिए जैसी व्यवस्था परमेश्वर की बनाई हुई है सो ठीक है, अर्थात् यह परमेश्वर की ही व्यवस्था है कि जब-जब परमेश्वर आदि सृष्टि में वेद का ज्ञान देगा, तब-तब चार ऋषियों को देगा। उससे आगे इन्हीं चार ऋषियों से वेद की परम्परा चलेगी।

परमेश्वर की इस व्यवस्था को न मानने पर 'अशोक वाटिका न्याय' जैसी स्थिति होगी, अर्थात् रावण ने माता सीता को अशोक वाटिका में रखा था, अब कोई कहे कि अशोक वाटिका में न रखकर महल में क्यों नहीं रखा? यदि महल में रखा होता तो कोई कह सकता है कि कहीं अन्यत्र क्यों नहीं रखा? इसलिए वेदों का ज्ञान देने के विषय में भी इसी प्रकार समझें।

जिज्ञासा २ - आपका कृपा पत्र ५१६८ (२९.३/१५)

प्राप्त हुआ। द्वितीय समुल्लास पुनः पढ़ने पर भी '**मातृमान् पितृमान् और आचार्यवान्**' विषयक शंका निर्मूल नहीं हुई। 'मातृ' और 'पितृ' शब्द के साथ 'मान्' का प्रयोग है, परन्तु 'आचार्य' शब्द के साथ 'वान्' का प्रयोग किस कारण से किया गया है, मेरी जिज्ञासा यह थी। कृपया, उचित परामर्श देकर कृतार्थ करेंगे। पुनः आपको तंग कर रहा हूँ, इसका खेद है, अवश्य समझाने की कृपा करेंगे, जिससे अल्पज्ञता दूर हो। परोपकारी के माध्यम से समाधान दें, जिससे दूसरों को भी लाभ मिले।

- सत्यदेव, बिहार-८०५१२१

समाधान - 'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद'- यह ब्राह्मण ग्रन्थ का वाक्य है। आपकी जिज्ञासा इसमें आये 'मान्' और 'वान्' को लेकर है। जिज्ञासा का कारण संस्कृत भाषा का ठीक से ज्ञान न होना है। व्याकरण की रीति से यहाँ तीनों शब्दों में '**तदस्यास्त्यस्मिन्नितति मतुप्**' अष्टा. ५.२.९४। सूत्र लगा हुआ है। इसका है अथवा इसमें यह है, इस अर्थ में मतुप् प्रत्यय हुआ है। व्याकरण में स्थान विशेष पर 'मतुप्' के 'म' को 'व' हो जाया करता है। '**मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः**' अष्टा. ८.२.९। इस सूत्र से 'म' को 'व' हो जाता है। जहाँ मकारान्त शब्द से 'मतुप्' प्रत्यय हुआ हो, वहाँ 'मतुप्' के 'म' को 'व' हो जाता है। अकारान्त शब्द से 'मतुप्' हुआ हो वहाँ भी 'व' हो जाता है। यह हमने सूत्र का आधा प्रयोग लिखा है। मातृ, पितृ शब्द न तो मकारान्त हैं और न ही अकारान्त हैं, इसलिए यहाँ मतुप् प्रत्यय के मकार को वकार नहीं हुआ, न होने के कारण 'मातृमान्', 'पितृमान्' इस रूप में रहे, किन्तु आचार्य शब्द अकारान्त है, सो अकारान्त होने से मतुप् के 'म' को 'व' होकर 'आचार्यवान्' बना। इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने के लिए संस्कृत भाषा का अभ्यास करें। अस्तु।

जिज्ञासा ३ (क) - सन्ध्या यानी ब्रह्मयज्ञ ही है, क्यों?

(ख) - सन्ध्या के लिये किसी के कमर में दर्द रहता हो, तो सोते-सोते यानी पलंग पर लेटे-लेटे कर ले तो क्या ठीक नहीं है? हमारे मुमुक्षुमुनि जिन्होंने दर्शन विषयक लेख भेजा था, कहते हैं कि इस तरह की गई सन्ध्या को प्रभु स्वीकार नहीं करेंगे, क्या ठीक है?

(ग) मुनि जी मेरे पड़ौसी हैं, इनसे तर्क-वितर्क होते रहते हैं। रामायण काल में कहते हैं कि जो वानर जाति बताई है, यह आजकल के अंग्रेज हैं जो भारत को इण्डिया कहते हैं।

- हनुमान आर्य, मु.पो. सिवानी मण्डी, जि. भिवानी, हरि.

समाधान (क) - हाँ, सन्ध्या ब्रह्मयज्ञ है। ब्रह्मयज्ञ के दो भाग हैं- एक सन्ध्योपासना की रीति से परमेश्वर का यथोचित् ध्यान करना और दूसरा सत्य शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना **(अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः)**। महर्षि दयानन्द ने तृतीय समुल्लास में लिखा, 'सन्ध्योपासन, जिसे ब्रह्म यज्ञ भी कहते हैं।''ब्रह्मयज्ञ वेदादि शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना, सन्ध्योपासन, योगाभ्यास।'' सत्यार्थप्रकाश, समुल्लास ४

महर्षि के इन वचनों से सिद्ध है कि 'सन्ध्या' ब्रह्मयज्ञ है।

(ख) सन्ध्या करने के लिए उचित आसन लगाकर बैठें तो यह उत्तम स्थिति होगी, क्योंकि वेदान्त दर्शन में कहा है- ''**आसीनः सम्भवात्**'' उपासना बैठकर करनी चाहिए....। इस सूत्र के भाष्य में पं. उदयवीर शास्त्री लिखते हैं, ''उपासना या ध्यान उस स्थिति का नाम है, जब चित्त इधर-उधर न डोले, उसमें एक विषय की वृत्ति का प्रवाह निरन्तर बहता रहे। ऐसी स्थिति चलते-फिरते या दौड़ते-भागते सम्भव नहीं। चलना-दौड़ना आदि चित्तवृत्ति को विक्षिप्त करते रहते हैं। खड़े रहना भी उपासना के लिए उपयोगी नहीं, क्योंकि इसमें शरीर धारण की ओर मन की वृत्ति लगी रहती है। लेटकर उपासना करने से अकस्मात् निद्रा से अभिभूत हो जाने का भय बना रहता है, निद्रा दबा ले तो उपासना धरी रह जाती है, इसलिए बैठकर उपयुक्त आसन लगाकर उपासना करना सम्भव होता है.....।''

गीता के अध्याय ६ के ११-१४ श्लोकों में भी बैठकर उपासना करने का कथन आया है। हाँ, यह अवश्य है कि उपासना किसी भी आसन, अर्थात् जिसमें स्थिरतापूर्वक और सुखपूर्वक शरीर को बिठाकर रखा जाये, की जा सकती है। इसमें किसी एक ही आसन का होना आवश्यक हो, ऐसा नियम नहीं है। इस विषय में महर्षि कपिल ने कहा है-

'स्थिरसुखमासनमिति न नियमः।'

इसलिए उपासना बैठकर करना अधिक उचित है। यदि शरीर किसी कारण से अस्वस्थ है तो वह बैठना कुर्सी आदि पर भी हो सकता है। वहाँ भी हम सावधानी पूर्वक बैठें कि जिससे सन्ध्योपासना ठीक से कर सकें।

हाँ, यदि व्यक्ति लेटकर अपना मन सन्ध्या में लगा लेता है, नींद नहीं आने देता है तो सन्ध्या लेटकर की जा सकती है, किन्तु यह काम है बड़ा कठिन। वैसे भी लेटकर सन्ध्या करना अच्छी स्थिति नहीं मानी जाती।

(ग) रामायण काल की 'वानर' जाति के वानर पशु नहीं थे, अपितु 'वानर' उपनाम वाले मनुष्य ही थे। वे आर्यावर्त्तवासी थे, कोई अंग्रेज नहीं थे। रामायण काल के 'वानर' विषय में अधिक जानने के लिए मथुरा से प्रकाशित 'शुद्ध हनुमान् चरित' का अध्ययन करें।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में आयोजित

भव्य वेद प्रचार यात्रा

गृह त्याग के पश्चात् महर्षि की अपने गृह-राज्य की पहली और अन्तिम यात्रा की स्मृति में इस भव्य वेद प्रचार यात्रा का आयोजन किया जा रहा है।

यह यात्रा नासिक (महाराष्ट्र) से २४-०६-२०१५ को आरम्भ होगी। अब से १४० वर्ष पूर्व ईसवी सन् १८७४ में ऋषिवर नासिक पधारे थे और वहाँ रामनगर, पंचवटी आदि स्थानों पर वेद प्रचार एवं पाखण्ड का खण्डन किया था। नासिक से महर्षि जी मुम्बई, सूरत, भड़ौच, अहमदाबाद, राजकोट, बड़ौदा आदि स्थानों पर गए थे। वेद प्रचार की जितनी आवश्यकता उस युग में थी, उससे कहीं अधिक आज है।

परोपकारिणी सभा के कार्यकारी प्रधान माननीय डॉ. धर्मवीर जी, मन्त्री श्री ओम मुनि जी, प्रसिद्ध आर्य इतिहासज्ञ प्रा. राजेन्द्र जी जिज्ञासु इस यात्रा में विभिन्न स्थानों पर आयोजनीय सभाओं को सम्बोधित करेंगे जिससे आर्य समाजों में जागृति आये और ऋषि-मिशन का काम गति पकड़े।

परोपकारिणी सभा की ओर से आर्यसमाजों को निमन्त्रण है कि वे भी इस यात्रा में जहाँ-जहाँ सम्भव हो, सम्मिलित होने की कृपा करें।

आर्य जनों को आर्य साहित्य उपलब्ध कराने के लिए प्रचारार्थ एवं विक्रयार्थ पुस्तकें भी एक वाहन पर उपलब्ध होंगी। आर्य समाजें, इस कार्य में सहयोग करेंगी, ऐसी आशा है। सभा के बैंक खाते में एतदर्थ सहायता राशि जमा कराई जा सकती है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर दल राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में

प्रान्तीय आर्य वीराङ्गना दल शिविर

का भव्य आयोजन

दिनांक : ०७ जून २०१५ रविवार से १२ जून २०१५ शुक्रवार तक

स्थान : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.)

आने की अविलम्ब सूचना देवें।

सम्पर्क सूत्र : ०९९५०९९९६७९, ९३१४३९४४२१

संस्था - समाचार

०१ से १५ मई २०१५

दिनभर गरम हवाएँ और पसीने की बूँदें, शाम को बादलों का गर्जन-तर्जन और पानी की बूँदें तथा रात को ठण्डी लहरें और ओस की बूँदें- ऋतुचक्र का यह मिलाजुला रूप हम सबने पिछले कुछ दिनों में देखा। प्रकृति की इस बदली हुई प्रवृत्ति को कौन समझे? यह पखवाड़ा ऋषि उद्यान और यहाँ के अन्तेवासियों ने स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना में व्यतीत किया। हवन कुण्ड को समिधाएँ मिलती रहीं और समिधाओं को साधक उपलब्ध होते रहे। गोशाला, भोजनशाला, चिकित्सालय, पुस्तकालय आदि की व्यवस्थाएँ सुचारु रहीं। एक विशेष बात यह हुई कि ऋषि उद्यान में दिनांक ११ मई २०१५ से महर्षि पतञ्जलि के **'योगदर्शन'** का विधिवत् अध्यापन **स्वामी विष्वङ् जी** द्वारा प्रारम्भ हो गया है। अन्य कक्षाएँ भी नियमित रूप से चलती रहीं। प्रान्तीय आर्यवीर दल शिविर के संयोजन की पूर्व व्यवस्थाएँ भी पूर्ण हो चुकी हैं। नेपाल और उत्तरी भारत में आये भीषण भूकम्पों ने सबको प्रकम्पित कर दिया है। भूकम्प-पीड़ितों की सहायता के लिए ऋषि उद्यान से स्वयं सेवकों का एक दल भेजा गया है। इस त्रासदी का कोई स्थायी हल नहीं है। हम तो बस इतना ही कहेंगे-

आँखों में आँसू रखे, होठों पर मुस्कान।
लेकिन भीतर स्थिर रहे, वह सच्चा इन्सान।।

प्रात:कालीन प्रवचन- चिन्तन, मनन और अनुशीलन- मनुस्मृति की लाक्षणिकता, उपयोगिता एवं प्रासंगिकता का पूरे मनोयोग पूर्वक साधारणीकरण कर रहे हैं **आचार्य सोमदेव जी** अपने प्रात:कालीन प्रवचन सत्र में। तृतीय अध्याय में गृहस्थाश्रम की महत्ता को बताते हुए पंचमहायज्ञों की अनिवार्यता और उनसे होने वाले लाभों की चर्चा की गई है। बलिवैश्वदेव यज्ञ की विस्तृत व्याख्या करते हुए महर्षि दयानन्द ने भी सत्यार्थप्रकाश के चौथे समुल्लास में कहा है कि जब भोजन सिद्ध हो, तब जो कुछ भोजनार्थ बने, उसमें से खट्टा, लवणयुक्त और क्षार को छोड़कर घृत, मिष्टयुक्त अन्न का चूल्हे की अग्नि में मन्त्रों के साथ होम करें। ये पाँचों यज्ञ शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक प्रसन्नता, पारिवारिक समन्वय एवं सामाजिक सौमनस्य प्रदान करते हैं।

प्रात:कालीन सत्र में आचार्य सोमदेव जी की अनुपस्थिति में **श्री सत्येन्द्र सिंह जी** ने कुछ बातें परमात्मा के नाम, स्थान, स्वभाव एवं कर्म में विषय में बताईं। सृष्टि-संचालन हेतु परमात्मा वही व्यवस्था करता है जो नीति नियमों के अनुकूल हो। वह सर्वशक्तिमान् है, पर उच्छृंखल और स्वच्छन्द नहीं है। परमात्मा हमारी आत्मा की भी आत्मा है। प्रकृति, ईश्वर और आत्मा के त्रैतवाद को समझाते हुए उन्होंने कहा कि बुद्धि पर अज्ञान का पर्दा पड़ा हुआ है। यही नीहारिका है, कुहरा है, जिसे हमें दूर हटाना है। बाहरी साधना, आन्तरिक जागृति और आत्मिक प्रतीति से जो जुड़ा है, वह इस कुहरे से मुक्त हो सकता है। वैवाहिक वर्षगाँठ पर श्री सुभाष नवाल एवं उनके परिवार को उन्होंने आशीर्वाद भी दिए।

जोधपुर प्रवास से लौटने के बाद **आचार्य सोमदेव जी** ने राष्ट्रीय अस्मिता के प्रश्न को समकालीन घटनाओं के सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हुए दु:ख व्यक्त किया और बताया कि अंग्रेजी भाषा, संस्कृति एवं संस्कारों ने भारत को इण्डिया बनाकर छोड़ दिया है। आर्ष परम्पराओं से जुड़े महानुभाव भी अपने बेटों-पोतों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में भर्ती कराते हैं। आचार्य जी ने बताया कि यह प्रवृत्ति राष्ट्रीय हितों को नुकसान पहुँचाने वाली है, इससे बचना चाहिए। महर्षि दयानन्द जी के एक वाक्य को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा कि जो जितना उपकार करेगा, ईश्वरीय व्यवस्था से उसको उतना ही लाभ पहुँचेगा। पंचमहायज्ञ वस्तुत: व्यष्टि से समष्टि तक उपकार करने वाली आध्यात्मिक क्रियाएँ ही हैं। हाँ, परोपकार के पूर्व व्यक्ति को अपना परिष्कार कर लेना चाहिए। उसके अभाव में वह अहंकारी बनकर ही रह जाएगा। सुख प्राप्त करने के लिए की गई क्रियाओं के प्रारम्भ में कई दु:खद अनुभवों से व्यक्ति का परिचय होता है। वहाँ यदि दृढ़ता रही तो सफलता अवश्य मिलेगी। स्वेच्छा से स्वीकृत दु:ख को इसीलिए सुख का जनक कहा गया है।

आचार्य जी ने बलिवैश्वदेव यज्ञ की विस्तार से चर्चा करते हुए उसके विभिन्न विधानों को समझाया। इसी तरह अतिथि यज्ञ प्रकरण में अतिथि के लक्षण बताते हुए मनु कहते हैं-

एकरात्रं तु निवसन्नतिथिर्ब्राह्मण: स्मृत:।
अनित्यं हि स्थितो यस्मात्तस्मादतिथिरुच्यते।।१०२।।

अर्थात् विद्वान् व्यक्ति यदि एक ही रात्रि पराये घर रहे

तो उसे अतिथि कहा जाता है, क्योंकि जो नित्य नहीं ठहरता और जिसका आना अनिश्चित होता है, वह अतिथि है। महर्षि मनु कहते हैं कि बैठने के लिए आसन, सोने के लिए स्थान, पीने के लिए पानी और सत्कारयुक्त मीठी वाणी- इन वस्तुओं की श्रेष्ठ व्यक्ति के घर में कभी कमी नहीं होती।

एक प्रवचन में **श्री सत्येन्द्रसिंह जी** ने ईश्वर की सत्ता के विषय में विस्तार से चर्चा करते हुए यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के मन्त्र '**ईशा वास्यमिदं सर्वं.....**' की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि संसार में सब कुछ गतिशील है। सूर्य, पृथिवी, चन्द्र, तारे- सब किसी परम सत्ता से गति प्राप्त करके घूम रहे हैं। यह जगत् ईश्वर के द्वारा बसाया गया है। हम इसको त्यागपूर्वक भोग करके ही अभ्युदय और निःश्रेयस् को प्राप्त कर सकते हैं। दूसरे मन्त्र में वेदोक्त नियमों का पालन करते हुए धर्मयुक्त एवं निष्काम कर्म के साथ १०० वर्ष तक आरोग्यमय जीवन जीने की कामना की गई है-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

मन का कलुष वाणी और क्रिया को भी कलुषित कर देता है। महर्षि दयानन्द ने इसीलिए युक्त आहार-विहार एवं संयम का पालन करने एवं आलस्य प्रमाद को त्यागने का विधान किया है। कर्म का सिद्धान्त सब पर लागू होता है। शुभ और अशुभ कर्मों के फल हमें भोगने ही पड़ते हैं, इसलिए प्रयत्नपूर्वक तथा पूरे ज्ञान के साथ शुभ कर्म करने का आदेश हमारे ऋषियों ने दिया। वस्तुतः ज्ञान एवं कर्म साथ-साथ चलते हैं। कर्म से हीन एवं ज्ञान से रहित व्यक्ति कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। ज्ञान की पराकाष्ठा का नाम वैराग्य है और कर्म की पराकाष्ठा का नाम पुरुषार्थ है। वेदों का आदेश है कि हम अप्राप्त को तो प्राप्त करें ही, प्राप्त की रक्षा करें, उसकी वृद्धि करें और सदुपयोग भी करें। श्री सत्येन्द्र सिंह जी ने '**असूर्या नाम ते लोका.....**' मन्त्र का भी भावार्थ बताया और कहा कि जो मनुष्य आत्मा का अर्थात् अपने-आपका हनन करते हैं, वे मरकर गहरे अन्धकार से आवृत्त होकर असुर भाव से युक्त लोकों में जाते हैं। 'आत्महना' शब्द की विस्तृत व्याख्या करते हुए उन्होंने अपने अनुभवों एवं संस्मरणों को सुनाया तथा हिन्दी के पुराने साप्ताहिक पत्रों से जुड़ी तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, मानवीय एवं अधोगामी प्रवृत्तियों पर अपनी प्रतिक्रियाएँ दीं। मन, वचन एवं कर्म की एकता जहाँ सर्वांगीण विकास की पृष्ठभूमि बनती है, वहीं उनकी विच्छिन्नता सर्वनाश को निमन्त्रण भी देती है। जो आर्य हैं, सर्वश्रेष्ठ हैं, धार्मिक हैं तथा विश्वबन्धुत्व में विश्वास रखते हैं, वे अनार्यत्व एवं असुरत्व से सदा दूर रहते हैं। महर्षि दयानन्द जी का भी यही सन्देश है।

सायंकालीन स्वाध्याय-विवेचन, विश्लेषण और निर्देशन- इस पखवाड़े में सायंकालीन सत्र के अन्तर्गत **श्री सत्येन्द्रसिंह जी** ने महर्षि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश की प्रासंगिकता पर जोर देते हुए ब्रह्मचारियों के लिए अपेक्षित कर्त्तव्यों की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि गुरुकुल में अध्ययनरत ब्रह्मचारियों को नियमित स्वाध्याय से जुड़े रहना चाहिए। उसमें प्रमाद नहीं करना चाहिए। मनुस्मृति के प्रसिद्ध श्लोकों- '**अभिवादनशीलस्य.....**' एवं '**वर्जयेन्मधु.....**' की उन्होंने विस्तार से व्याख्या की एवं श्रद्धा के सन्दर्भ में उनके औचित्य को समझाया। गुरुकुल आबू से कुछ ब्रह्मचारी ऋषि उद्यान में पर्यटनार्थ आए थे। सत्येन्द्र जी ने उन्हें भी सम्बोधित करते हुए प्रासंगिक वक्तव्य दिया। तैत्तिरीय उपनिषद् की शिक्षाध्याय वल्ली के एकादश अनुवाक में दिये गए मन्त्रों को महर्षि दयानन्द जी ने इस समुल्लास में विशेष रूप से दिया है, जिनके माध्यम से आचार्य अपने अन्तेवासियों को अनुशासित करते हैं। '**सत्यं वद**', '**धर्मं चर**', '**स्वाध्यायान्मा प्रमद**' जैसे शाश्वत सूत्रों में उपदेशामृत भरा पड़ा है। सत्याचरण और धर्माचरण एक दूसरे के पूरक हैं। सत्येन्द्र जी ने प्रमाद जैसे दूषण की विस्तार से व्याख्या की और उससे बचने के लिए सतर्कता और जागृति की आवश्यकता पर बल दिया। इसी तरह दान के महत्त्व को बताते हुए '**श्रद्धयादेयम्, अश्रद्धया देयम्**' तथा '**ह्रिया देयम्, भिया देवम्**' की उन्होंने आज के सन्दर्भ में विस्तृत समीक्षा की।

सकाम कर्म एवं निष्काम कर्म की लक्ष्मण रेखा को स्पष्ट करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा (जिजीविषा) को शास्त्र सम्मत मानकर श्री सत्येन्द्रजी ने '**आचारः परमो धर्मः**' की विस्तार से व्याख्या की। उन्होंने बताया कि धर्मानुसार वेदोक्त जीवन जीने की कामना करते हुए निष्काम कर्म करना चाहिए। यही आर्ष ग्रन्थों का आदेश है। महर्षि दयानन्द जी ने धर्म के चार लक्षणों की व्याख्या करते हुए मनुस्मृति का यह श्लोक दिया है-

श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।

श्री सत्येन्द्र जी ने इस श्लोक की विवेचना करते हुए

महाभारत में दिए धर्म के सूत्रात्मक लक्षण को भी समझाया। इस पखवाड़े में ९ मई को वीरवर महाराणा प्रताप की जयन्ती के अवसर पर उन्होंने उस नरपुंगव को श्रद्धापूर्वक याद करते हुए कुछ महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं और प्रसंगों से भी श्रोताओं को परिचित कराया।

'धर्माधर्म का निश्चय बिना वेद के ठीक-ठीक नहीं होता।'-इस तथ्य के साथ ही यह भी सत्य है कि 'जो पुरुष (अर्थ) सुवर्णादि रत्न और (काम) स्त्रीसेवनादि में नहीं फँसते हैं, उन्हीं को धर्म का ज्ञान प्राप्त होता है।' ब्राह्मणवाद के कारण पाखण्ड की वृद्धि और सद्धर्म की अवनति हुई। यदि क्षत्रिय आदि भी वेदाध्ययन करते तो धार्मिक निरंकुशता नहीं बढ़ती। सभी वर्णों में विद्या एवं धर्म का समान भाव से प्रचार हो तो स्थिति सुधर सकती है।

स्वाध्याय किन ग्रन्थों का किया जाए- इस प्रश्न का भी महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश में विस्तार से उत्तर दिया है। उन्होंने बताया कि पठनीय ग्रन्थों की पाँच प्रकार से परीक्षा करनी चाहिए और उन परीक्षाओं में खरे उतरने वाले ग्रन्थों को ही स्वाध्याय में सम्मिलित करना चाहिए।

एक प्रवचन में **उपाचार्य श्री सत्येन्द्र जी** ने महर्षि दयानन्द कृत 'आर्योद्देश्य रत्नमाला' के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए उसके प्रथम रत्न की विस्तृत व्याख्या की, जिसमें ईश्वर के गुण, धर्म, नाम, स्वभाव आदि से सम्बन्धित लक्षण देकर उसको पहचानने की विधि प्रदान की गई है।

इस पखवाड़े के अन्तिम दिन **डॉ. धर्मवीर जी** का सायंकालीन स्वाध्याय सत्र में मननीय प्रवचन हुआ। उन्होंने धर्म और व्यापार के मनोवैज्ञानिक एवं व्यावहारिक गणित को समझाते हुए कहा कि धर्म प्रत्येक स्थिति में आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है। अपत्ति के समय पुण्य ही हमारी रक्षा करता है। वस्तुतः तात्कालिक एवं दीर्घकालिक शब्द अन्योन्याश्रित हैं। धर्म और व्यापार आवश्यकता तथा मूल्य से जुड़े हैं, अतः वे तात्कालिक भी हैं और दीर्घकालिक भी। धर्म सेवा से जुड़ा है और व्यापार सुविधा से। श्री धर्मवीर जी ने कई प्रसंग एवं आख्यान सुनाकर अपने इस तथ्य को पुष्ट किया कि धर्म भी एक व्यापार है और व्यापार भी एक धर्म है। हम जब तक इन दोनों के औचित्य और उपयोग को व्यक्ति के अस्तित्व से नहीं जोड़ते, तब तक ये जीवनोपयोगी नहीं बन सकते। ईश्वर एवं धर्म मानव मात्र के लिए एक देशीय नहीं, सार्वदेशीय अनिवार्यताएँ हैं। जो इस तथ्य को समझ लेता है, वह स्व, सर्वस्व और सर्वेश्वर को भी समझ लेता है। इस अवसर पर श्री गौरव मिश्रा को उनके जन्म दिवस की बधाई दी गई एवं मंगलमय जीवन की कामना की गई।

विविधः आयोजन, प्रयोजन एवं प्रस्तुतिः- विशिष्ट प्रवचनों एवं व्याख्यानों के अतिरिक्त बीच-बीच में ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों एवं अतिथियों के वक्तव्य तथा भजन आदि भी यहाँ आयोजित होते हैं। इस शृंखला में ब्र. मनोज ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए बताया कि आज का मानव अपने निम्न विचारों एवं गलित व्यवहारों के कारण पशु-पक्षियों से भी गया-बीता हो गया है। कुछ मनोरंजक एवं रोचक कथा-सूत्रों के माध्यम से उन्होंने ज्ञान के महत्त्व को प्रतिपादित किया। गुरुकुल आबू से पर्यटन हेतु आए ब्रह्मचारियों में से ब्र. महिपाल ने प्रभावपूर्ण भजन प्रस्तुत किया। **श्री ओममुनि जी** ने अपने एक वक्तव्य में कथनी और करनी के भेद को बताते हुए कुछ संस्मरण सुनाए तथा ऋषि उद्यान के साधकों को प्रेरणा दी कि जीवन में सिद्धान्तवादिता को जीवित रखने के लिए मन, वचन एवं कर्म का एकत्व चाहिए। ब्र. काव्यप्रकाश ने भजन के माध्यम से अपनी आस्था श्रोताओं तक पहुँचाई। ब्र. निरंजन ने चारों युगों में सत्यासत्य के बीच होने वाले संघर्ष, अलग-अलग समय में महापुरुषों के योगदान और भारत के समकालीन परिदृश्य में आर्यसमाज के कर्त्तव्यों की चर्चा की। अस्तु।

साधना के कई मार्ग हैं, कई आयाम हैं। मन की खिड़की से परमात्मा के दर्शन हो जाएँ, इस आशा में ध्यान और प्रार्थना के समय साधक कितना द्रवित हो जाता है? उसका एक-एक अश्रु बोलता है-

आँखों में आँसू छलक, गद्‌गद् कण्ठ अबोल।
मेरे मन के देवता, अब तो खिड़की खोल।।

जैसे इस संसार में अति कामना प्रशंसनीय नहीं और कामना के विना कोई कार्य्य सिद्ध नहीं हो सकता इसलिये धर्म्म की कामना करनी और अधर्म्म की नहीं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४८

विवाह करके स्त्री-पुरुषों को चाहिये कि जिस-जिस काम से विद्या, अच्छी शिक्षा, बुद्धि, धन, सुहृद्भाव और परोपकार बढ़े, उस कर्म का सेवन अवश्य किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

स्तुता मया वरदा वेदमाता-११

येन देवा न वियन्ति नो च विद्वषते मिथः।
तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्यः।।

-अथर्व. ३.३०.४

मन्त्र में घर के बढ़ाने की बात है। यहाँ इसके लिए ब्रह्म शब्द कर प्रयोग किया गया है। ब्रह्म शब्द ईश्वर का भी वाचक है, क्योंकि वह सबसे बड़ा है। इसी प्रकार ज्ञान को भी ब्रह्म कहा जाता है। जो ज्ञान में सबसे बढ़कर है, उसे ब्रह्मा कहा गया है। इसी कारण संसार के प्रारम्भ में जो सबसे ज्ञानी पुरुष हुआ, उसका भी नाम ब्रह्मा है। इसके लिए उपनिषद् में कहा गया है, **ब्रह्मा देवानां प्रथमः संबभूव।** देवताओं में प्रथम ब्रह्मा हुआ। आज भी यज्ञ आदि कर्मों में जो अधिक जानकार होता है, उसे ही हम अपना मार्गदर्शक चुनते हैं। उसे ब्रह्मा बनाते हैं।

मन्त्र में घर को भी बड़ा बनाने की बात की गई है। मन्त्र कहता है- मैं तुम्हारे घर को बड़ा बनाना चाहता हूँ। घर बड़ा होता है, समृद्धि से। घर को समृद्ध करने का उपाय इस मन्त्र में बताया गया है। उपाय क्या हो सकता है? उपाय है **संज्ञानम्।** संज्ञान का शास्त्रीय अर्थ ज्ञान है, चेतना है। हम इसे सामान्य भाषा में कहें तो समझ कह सकते हैं। घर को बड़ा बनाने के लिए, सम्पन्न या समृद्ध बनाने के लिए घर में रहने वाले सदस्यों को समझदार बनना होगा। सभी सदस्य समझदार होंगे, तभी घर परिवार समृद्ध होगा। घर में सबका समझदार होना आवश्यक है। एक भी नासमझ व्यक्ति घर की व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करके रख देता है। घर में सबकी समझदारी से ही व्यवस्था बनी रह सकती है। आजकल समझदार का अर्थ चालाक या स्वार्थी भी हो जाता है। लोग कहते हैं- यह व्यक्ति बड़ा समझदार है, उसे अपना काम बनाना आता है। ऐसे शब्द श्रेष्ठ अर्थ को नहीं देते, इसलिये दुनियादार, समझदार, व्यावहारिक आदि शब्द सदा उचित और श्रेष्ठ अर्थ में ही प्रयोग में नहीं आते, परन्तु वेद में इस समझदारी की कसौटी भी दी है। वेद कहता है- समझदार देव होते हैं। मनुष्यों को समझदार बनने के लिए देवों के गुण अपने में धारण करने होंगे। देवों का देवत्व जिन गुणों से आता है, उसे देवों के कर्म से समझा जा सकता है। देवों का एक पर्यायवाची शब्द है- **अनिमेष।** ऐसा माना जाता है कि देवता लोग कभी पलक नहीं झपकाते। क्यों नहीं झपकाते, इसे समझाने के लिये पुराण में कथा आती है। देवताओं ने और असुरों ने मिलकर समुद्र मन्थन किया। जो पहले मिला वह असुरों ने लिया, जो बाद में मिला वह देवताओं ने लिया। पहले मिलने वाली वस्तुओं में विष था, जिसे बाँटने के लिए कोई तैयार ही नहीं था, जो शिव के कण्ठ का अलंकरण बन गया। अन्त में अमृत का कलश निकला, जिस पर देवताओं ने अधिकार कर लिया। इसी अमृत के कारण देवता अमरता को प्राप्त हुए। असुर इस अमृत को पाने के लिए सतत संघर्षरत हैं, इस कारण देवताओं को अमृत की रक्षा के लिए सतत् जागना पड़ता है। वे इतने सावधान हैं कि पलक भी नहीं झपकाते। पलक झपकने की असावधानी भी उनसे अमृत कलश के छीने जाने का कारण बन सकती है। देवताओं के पास अमृत ही नहीं रहा तो देवत्व कैसे रहेगा? संस्कार विधि में बालक की दीर्घायु की कामना करते हुए जो मन्त्र पढ़े गये हैं, उनमें एक मन्त्र में कहा गया है- देवताओं की दीर्घायु का कारण अमृत है। उनके पास अमृत है, इसलिए वे दीर्घजीवी हैं- **देवा आयुष्मन्तः ते अमृतेनायुष्मन्तः।** अतः देव दीर्घजीवी अमृत से हैं। इसका अभिप्राय है कि जो मनुष्य समृद्ध होना चाहता है, उसे सावधान रहना होगा। सावधानी हटते ही दुर्घटना घटती है।

विवाह संस्कार में सप्तपदी कराते हुए चौथे कदम को **मयोभवाय चतुष्पदी भव** कहा है। यहाँ यह तो कह दिया, परन्तु कोई वस्तु नहीं बताई। अन्न के लिये पहला कदम, बल के लिये दूसरा, समृद्धि के लिये तीसरा, वैसे ही सुख के लिए चौथा। अब समझने की बात है कि समृद्धि के लिये जब तीसरा कदम कह दिया था तो चौथा कदम सुख के लिये कहने की क्या आवश्यकता थी? इससे पहले अन्न, बल और धन प्राप्त करने की बात कह चुका है, फिर पृथक् से सुख के लिये प्रयास करने की आवश्यकता कहाँ पड़ती है? परन्तु पृथक् कहने का अभिप्राय है, इन सब साधनों के होने के बाद भी घर-परिवार में सुख हो, यह आवश्यक नहीं है। भौतिक साधनों का अभाव कष्ट देता है, परन्तु वे मुख्य रूप से शरीर तक ही सीमित रहते हैं। उन कष्टों के रहते हुए भी मनुष्य सुखी रह सकता है, परन्तु साधनों के रहते सुख का होना आवश्यक नहीं। सुख मानसिक परिस्थिति है, जबकि सुविधा शारीरिक वस्तु के अभाव में शारीरिक श्रम बढ़ जाता है, इतना ही है। सुख पाने के लिए मनुष्य के मन में देवत्व के भाव जगाना आवश्यक है, अतः मन्त्र में देवत्व के बाधक भावों को दूर करने के लिए कहा गया है।

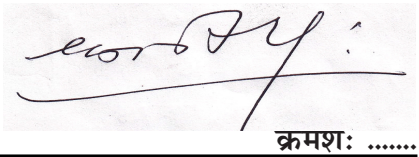

क्रमशः .....

आर्यजगत् के समाचार

१. शिविर- ग्राम जमानी के महर्षि दयानन्द सरस्वती उद्यान (गुरुकुल आश्रम) एवं संचालिका परोपकारिणी सभा, अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में ८ से १४ अप्रैल तक चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें १२ से २५ वर्ष तक के युवाओं को शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं शैक्षणिक रूप से सबल बनाने के साथ ही उनके चरित्र निर्माण पर जोर दिया गया। उक्त आशय की जानकारी देते हुए आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने बताया कि इस शिविर से युवाओं को नई चेतना मिली एवं उनका सर्वांगीण विकास हुआ। शिविर में लगभग ३५ बच्चों ने भाग लिया।

२. शिविर- पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज द्वारा स्थापित, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित दयानन्द मठ, घण्डराँ में आर्य वीर दल का शिविर स्वामी सदानन्द जी की अध्यक्षता में १ से ८ जून २०१५ तक विशाल स्तर पर लगाया जा रहा है। इस शिविर में शारीरिक और बौद्धिक पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण श्री रामफल आर्य (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, हि.प्र.) एवं श्री आचार्य अनंगपाल आर्य के द्वारा किया जायेगा। शिविर में शारीरिक व्यायाम, विभिन्न विषयों पर बौद्धिक प्रवचन, व्यक्तित्व का विकास, अनुशासन एवं रचनात्मक कार्यक्रम चलाये जायेंगे। शिविर में अनुशासन का पूर्णतः पालन करना होगा।

३. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसारार्थ एवं आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने के लिए आर्य समाज मन्दिर, पटियाला (पंजाब) द्वारा आयोजित छह दिवसीय वार्षिकोत्सव एवं विश्वशान्ति गायत्री महायज्ञ दि. १४ से १९ अप्रैल २०१५ को पूर्ण सफलता एवं हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य प्रवक्ता के रूप में वैदिक विद्वान् आचार्य संजय याज्ञिक (मेरठ), डॉ. रामप्रकाश शर्मा (दिल्ली), आर्य संन्यासी स्वामी ब्रह्मवेश (पटियाला) तथा भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी (आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब) ने पटियाला के आर्य जनों को अपने सुग्राही पवित्र वेद व्याख्यानों एवं प्रेरणादायी सुमधुर भजनों से उपकृत किया।

४. रजत जयन्ती- आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, आबूपर्वत में वि.स. २०४७ (सन् १९९०) को विधिवत् रूप से विद्याध्ययन-अध्यापन प्रारम्भ किया गया था। इस प्रकार से वि.सं. २०७२ (सन् २०१५) को गुरुकुल में विद्याध्ययन-अध्यापन के पच्चीस वर्ष पूर्ण हो रहे हैं, अतः इस वर्ष दि. २९ से ३१ मई २०१५ तक आयोजित वार्षिकोत्सव गुरुकुल के रजत जयन्ती वर्ष के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर गुरुकुल से विद्याध्ययन कर चुके सभी स्नातकों का परिचय करवाया गया एवं भविष्य की योजनाओं के विषय में जानकारी दी गई।

५. शिविर- संयोजक श्री मृदुला चौहान ने बताया कि राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर दि. १८ से २८ जून २०१५ को एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग वैस्ट, दिल्ली में आयोजित किया जायेगा। उक्त शिविर में श्रीमती अभिलाषा, श्री सचिन, श्री सत्यम प्रशिक्षण देंगे।

६. पुरस्कार- 'महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान' फरीदाबाद की अध्यक्षा डॉ. श्रीमती विमल महता, विभूषण शिक्षाविद् एवं समाजसेवी को 'भारत विभूषण सम्मान पुरस्कार' द्वारा सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार 'ग्लोबल एचीवर फाउण्डेशन' द्वारा उनके अतुलनीय कार्यों के लिए प्रदान किया गया है।

७. सम्मेलन- वैदिक मिशन, मुम्बई द्वारा वेद-वेदान्त सम्मेलन का आयोजन आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई में २१-२२ मार्च २०१५ को किया गया। इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए समस्त भारत से लगभग ६० विद्वत्गण पधारे थे। इस सम्मेलन में अतिथि के रूप में आर्यसमाज न्यूयार्क के प्रधान श्री चन्द्रभान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के पूर्व मन्त्री डॉ. रमेश गुप्ता पधारे। इस कार्यक्रम में विद्वानों ने त्रैतवाद की सत्यता को प्रमाणित करने के अनेक प्रमाण प्रस्तुत किए। सभी विद्वान् अपने-अपने शोध पत्र भी लेकर आए थे। इस प्रकार यह सम्मेलन सचमुच काफी सफल व लाभकारी सिद्ध हुआ।

८. सम्मान- आचार्या डॉ. प्रज्ञादेवी जी की प्रथम अन्तेवासिनी शिष्या, यथानाम तथागुण, पाणिनि कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या, आर्यजगत् की प्रसिद्ध वेद, व्याकरण, दर्शन, कर्मकाण्ड आदि शास्त्रों की परम विदुषी,

संस्कृत एवं हिन्दी की प्रसिद्ध सिद्धान्त लेखिका, गुरुकुल संचालिका, आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा को उ.प्र. संस्कृत अकादमी ने उनकी वेद, व्याकरण, संस्कृत के प्रति की गई सेवाओं के लिए विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया है। पुरस्कार में शॉल, ताम्र सम्मानपत्र एवं ५१०००/- की धन राशि प्रदान की गई। यह पुरस्कार विधानसभा के सभाध्यक्ष श्री माताप्रसाद पाण्डेय के सान्निध्य में गत २० मार्च २०१५ को दिया गया।

९. सम्मेलन सम्पन्न- गुरुकुल हरिपुर के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य के सान्निध्य में गत दि. २७ से २९ मार्च २०१५ को ओड़िशा प्रान्त के अनुगुल जिला के कुकुडांग ग्राम में त्रिदिवसीय वैदिक धर्म सम्मेलन एवं दिव्य मानव निर्माण शिविर, ओड़िशा आर्यसमाज के विभिन्न पदाधिकारियों तथा अनेक गणमान्य महानुभावों की पावन उपस्थिति में अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ। इस त्रिदिवसीय सम्पूर्ण कार्यक्रम के सीधे प्रसारण की व्यवस्था स्थानीय दो-तीन चैनलों के माध्यम से की गई थी, जिससे अनेक लोग लाभान्वित एवं वैदिक यज्ञ से परिचित हुए।

१०. यज्ञ सम्पन्न- दि. ३१ मार्च से ५ अप्रैल २०१५ तक इण्टक मैदान के सामने मंगलमय हाउस में गौसपुरा नं. १ आर्यसमाज का वार्षिक-उत्सव एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। यह पारायण यज्ञ गिरीशमुनि की प्रेरणा से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में आमन्त्रित विद्वान्- आचार्य श्री राजदेव, आचार्य ओमव्रत, आचार्य विनोद कुमार, पं. दिनेशदत्त भजनोपदेशक आदि उपस्थित थे।

चुनाव समाचार

११. आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत के चुनाव में **प्रधान**- श्री अशोक गोयल, **मन्त्री**- श्री सुदर्शन आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री अशोक आर्य को चुना गया।

१२. आर्य समाज सज्जन नगर, जि. उदयपुर, राज. के चुनाव में **प्रधान**- श्रीमती रजनी दीक्षित, **मन्त्री**- श्री हेमांग जोशी, **कोषाध्यक्ष**- श्री अशोक उदावत को चुना गया।

१३. आर्य समाज हिरण मगरी, ४८४, सेक्टर-४, जि. उदयपुर, राज. के चुनाव में **प्रधान**- श्री भँवरलाल आर्य, **मन्त्राणी**- श्रीमती ललिता मेहर, **कोषाध्यक्ष**- श्री प्रेम नारायण जायसवाल को चुना गया।

१४. आर्य समाज नई मण्डी, १६-डी, महर्षि दयानन्द मार्ग, जि. मुजफ्फरनगर, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- श्री आनन्दपाल सिंह आर्य, **मन्त्री**- श्री आर.पी. शर्मा, **कोषाध्यक्ष**- श्री गुलबीरसिंह आर्य को चुना गया।

१५. आर्य उपप्रतिनिधि सभा, वाराणसी के चुनाव में **प्रधान**- श्री अजीत कुमार आर्य, **मन्त्री**- श्री प्रमोद आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री दिनेश आर्य को चुना गया।

शोक समाचार

१६. परोपकारिणी सभा, अजमेर के पूर्व कार्य सचिव स्व. श्री नृसिंह प्रसाद पारीक की धर्मपत्नी **श्रीमती विमला देवी** का आकस्मिक देहावसान दि. १७ मई २०१५ को ६७ वर्ष की आयु में हो गया। आपका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक पद्धति से हुआ। वे एक धार्मिक एवं सरल स्वभाव की महिला थी। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि उनके परिवार को दु:ख सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करें।

१७. आर्ष गुरुकुल, आबू पर्वत के न्यासी तथा अहमदाबाद (गुजरात) निवासी श्री कमलेश कुमार शास्त्री के पिता **श्री छगनलाल गंगाराम पटेल** का दि. ४ मई २०१५ को देहावसान हो गया। वे ९१ वर्ष के थे। अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक पद्धति से विसनगर, जि. महेसाणा (उ.गु.) में किया गया। आपने अपने जीवन के ५०वें वर्ष में व्यवसायादि से निवृत्ति लेकर शेष ४०-४१ वर्ष के जीवन को वैदिक स्वाध्याय तथा नित्य यज्ञ कार्य में तथा धर्म-संस्कृति के प्रचार-प्रसार में व्यतीत किया। परिवार उनके पदचिह्नों पर चलता हुआ पितृतर्पण के अपने उत्तरदायित्व को निभाता रहे, यही प्रार्थना है।

१८. श्री प्रतापसिंह शास्त्री, पूर्व मन्त्री आर्यसमाज नागौरी गेट, हिसार, हरि. का निधन हृदयाघात के कारण दि. १४ मई २०१५ को हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

परोपकारी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

स्त्री आर्य समाज, मॉडल टाऊन, जालन्धर का गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज, मॉडल टाऊन, जालन्धर में १४ जनवरी २०१५ से लगातार एक महीने चलने वाला गायत्री महायज्ञ १२ फरवरी २०१५ वीरवार को पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। स्त्री आर्य समाज, मॉडल टाऊन द्वारा हर वर्ष माघ महीने में गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया जाता है और इस गायत्री महायज्ञ में बाहर से विद्वानों को आमन्त्रित किया जाता है। इस वर्ष भी विद्वानों के द्वारा गायत्री महिमा का गुणगाान किया गया। १४ जनवरी से २१ जनवरी तक महात्मा चैतन्यमुनि जी के प्रवचन हुए। २२ जनवरी से २९ जनवरी तक श्री राजू जी वैज्ञानिक के प्रवचन हुए। ३० जनवरी से ४ फरवरी तक श्री सुरेश कुमार जी शास्त्री के प्रवचन हुए। ५ फरवरी से १२ फरवरी तक डॉ. महावीर जी मुमुक्षु के प्रवचन हुए। इन सभी विद्वानों ने अपने प्रवचनों में गायत्री महिमा के ऊपर प्रकाश डाला और सभी को गायत्री मन्त्र का जाप करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि गायत्री मन्त्र का जाप करने वाला सब प्रकार के पापों से छूट जाता है, जैसे साँप केंचुली को छोड़ देता है। गायत्री मन्त्र के द्वारा उपासना करता हुआ मनुष्य ऋतम्भरा बुद्धि को प्राप्त कर लेता है। उन्होंने कहा कि गायत्री उपासना में सफल होने के लिए प्रत्येक मनष्य को यम-नियमों का पालन करना चहिए। यम-नियमों का पालन करना उसी प्रकार अनिवार्य है, जैसे कोई बड़ा भवन बनाने के लिए उसकी मजबूत नींव रखना अनिवार्य है। उन्होंने बताया कि भक्ति के तीनों अंग-स्तुति, प्रार्थना और उपासना गायत्री मन्त्र के अन्दर विद्यमान हैं। लगातार एक मास तक चले इस गायत्री महायज्ञ में २०० बहनों ने यजमान बनकर यज्ञ में आहुतियाँ डालीं। बहनों के साथ-साथ भाइयों ने भी बड़ी श्रद्धा से इस कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम की विशेषता है कि इसमें बाहर से भजनोपदेशकों को नहीं बुलाया जाता और बहनों के द्वारा ही भजन गाए जाते हैं। सभी नगर निवासियों ने इस पुण्य के कार्य में तन-मन-धन से सहयोग दिया और पुण्य प्राप्त किया। इस एक महीने के कार्यक्रम के दौरान जितने भी त्यौहार आए, उन सबको बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। स्त्री आर्य समाज के द्वारा लोगों में जागृति पैदा करने के लिए वैदिक साहित्य भी बाँटा गया।

इस गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति १२ फरवरी २०१५ वीरवार को हुई। आर्य समाज परिसर में ३१ हवनकुण्डों में बड़ी संख्या में परिवारों ने यजमान बनकर पूर्णाहुतियाँ डालीं और पुण्य कमाया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यप्रकाश जी शास्त्री तथा श्री बुद्धदेव जी शास्त्री ने मन्त्रोच्चारण किया। श्रीमती दमयन्ती सेठी और श्रीमती रजनी सेठी ने 'गायत्री माता तुमको लाखों प्रणाम' भजन गाकर गायत्री महिमा का गुणगान किया। प्रवचन करते हुए श्री महावीर जी मुमुक्षु ने कहा कि गायत्री हमारी वेद माता है, इसलिए सभी को गायत्री के साथ जुड़े रहना चाहिए तथा अपनी सोच को आशावादी बनाना चाहिए। समारोह की अध्यक्षता करते हुए डॉ. सुषमा चौपड़ा ने कहा कि पूरा माह सभी लोग अध्यात्म के साथ जुड़े रहे, परन्तु अध्यात्म के साथ जुड़ने के लिए शरीर का स्वस्थ होना अति आवश्यक है। उन्होंने सभी को स्वस्थ रहने के टिप्स देते हुए कहा कि कभी तनाव में नहीं रहना चाहिए तथा टी.वी. देखते हुए कभी भोजन नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा कि भूत और भविष्य की चिन्ता में अपना वर्तमान कभी खराब नहीं करना चाहिए। उन्होंने सभी को सैर करने तथा खुश रहने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम की मुख्यातिथि श्रीमती सरला भारद्वाज ने कहा कि आर्य कोई विशेष धर्म नहीं, बल्कि जीवन में श्रेष्ठ बनना ही आर्य है तथा सभी को अपने कर्मों से आर्य बनना चाहिए। मंच का संचालन करते हुए नीरू कपूर और ज्योति शर्मा ने कहा कि स्त्री आर्य समाज की प्रधान श्रीमती सुशीला भगत के प्रयास से हर साल गायत्री महायज्ञ होता है तथा सभी को महापुरुषों के प्रवचन सुनने का मौका भी मिलता है। समाज की मन्त्राणी प्रमीला अरोड़ा ने स्त्री आर्य समाज की रिपोर्ट पढ़कर सभी गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि स्त्री आर्य समाज के द्वारा गुरुकुलों, गौशालाओं तथा अन्य समाज सेवा के कार्यों में अपना योगदान दिया जाता है। स्त्री आर्य समाज की प्रधान श्रीमती सुशीला भगत ने अन्त में सभी का आभार व्यक्त करते हुए विशेष रूप से श्रीमती दमयन्ती सेठी को दुशाला भेंट करके तथा फूलमाला पहना कर सम्मानित किया। अन्य सभी सहयोगियों को पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि आप सभी बहनों के सहयोग से ही हमारा समाज दिन प्रतिदिन उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है। सभी से अनुरोध करते हुए उन्होंने कहा कि मैं भविष्य में भी आपसे इसी प्रकार सहयोग की कामना करती हूँ। आपके प्यार और सहयोग से ही हमारे सभी कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न होते हैं।

इस अवसर पर माता आनन्दायति, गुलशन शर्मा, स्वदेश महाजन, सुशील खरबन्दा, सरला सेतिया, रोमिला आर्या, राजमोहिनी सोंधी, हिन्दपाल सेठी, रजनी सेठी , जोगिन्दर भण्डारी, अजय महाजन, के.डी. कुन्द्रा, नीलू खन्ना, ऊषा महाजन व अन्य बहुत से गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।